ध्यान देने योग्य बात





☎ 1118

कोडूराम देवप्रकाश

[illegible]

कोट गेट बीकानेर।

1. किन्हीं कुशल कारीगरों द्वारा बोया जाता है।
2. पगड़ी की तथा [illegible] [illegible] जाती है।
3. विवाह के समय [illegible] तथा [illegible] पर [illegible] होता है।
4. [illegible] आती है।

॥ अर्हम् ॥

कवीन्द्र केलि

अपर नाम

गहूंली संग्रह प्रथम भाग

निर्माता

प्रातः स्मरणीय पूज्यपाद गणाधीश्वर सद्गुरु
श्रीमद् हरिसागरजी महाराज साहब के

शिष्य रत्न

मुनि प्रवर कवीन्द्र सागर जी महाराज

प्रकाशक

॥ हरिसागर जैन पुस्तकालय ॥
लोहावट जाटावास मारवाड़ ।

सुखसागर ज्ञान विन्दु न० २१

॥ श्रीसुखसागर भगवद् हरि पूज्य सद्गुरुभ्योनम ॥

कवीन्द्र केलि

अपर नाम

गहूली संग्रह प्रथम भाग

निर्माता —

॥ मुनि-प्रवर कवीन्द्र सागर जी महाराज ॥

मुद्रण-द्रव्य-दात्री –

श्रीमती कुञ्जी बाई

मालीवाडा हीरानन्द की गली, देहली ।

वीर सं० २४५७-वि० सं० १९८८ ।

मूल्य

पठन अनुशीलन ।

गहूँलियों गान की प्रथा प्राचीन काल से प्रचलित है, वर्त्तमान में व्याख्यान के मध्य में गाई जाती हैं। पूर्व कवियों की बनाई हुई गहूँलियाँ वर्त्तमान में भी सख्यातीत प्रसिद्ध विद्यमान हैं, उन में उस २ समय के अनुकूल भाव-भाषा और तर्जें रही हुई हैं अत गाने में कुछ कम अनुकूलता पड़ती है, उसी अनुकूलता का बढ़ाव के शुभहेतु से 'पूज्यपाद गणाधिश्वर श्रीमान् हरिसागरजी महाराज साहब' क शिष्यरत्न 'मुनिप्रवर कवीन्द्रसागर जी महाराज ने गहूलियों को महात्माओं के गुण ग्राम के साथ शिक्षाप्रद सदुपदेशों से भरपूर सरल मधुर नई तर्जों स हिन्दी भाषा में निर्माण कर के हमारी अभिलाषा पूर्ण की है। परोप काराय सतां विभूतय ।'

प्रस्तुत पुस्तक को श्रीहरिसागर जैन पुस्तकालय' द्वारा प्रकाशनार्थ देहली निवासी जौहरी सोहनलाल जी बहोरे की धर्मपत्नी श्रीमती कूजीबाई ने द्रव्य सहायता द कर स्वपुत्री हीरोदेवी के स्मरणार्थ भेंट स्वरूप वितीर्ण करवाई है। अत धन्यवाद देता हूं और उदारात्माओं का तदनु सरणार्थ प्रेरणा करता हूं।

परिचायक —

रतनगढ़ निवासी वैरागी सोलामल सींघं

❀ श्रीमती हीरादेवी की संक्षिप्त जीवनी ❀

धर्म आराधितो येन, कृत कर्त्तव्य मात्मन ।
हिताय जीवित यस्य, किं मृत स न जीवति ॥

(कवीन्द्रकेलि)

स्थूल देह को छोड कर के भी धर्मी कर्त्तव्यशील सर्वहितैषिणी आत्माएं पृथ्वीपट से लुप्त नहीं होती, प्रत्युत वही प्रभाव सूक्ष्मकाय से जगत् में जमाये रखती हैं। बस ही श्रीमती हीरो देवी वि० स० १९६७ चैत शु० प्रतिपदा के दिन अपने मोसाल बसई में देहली निवासी जौहरी लाला सोहनलाल जी की धर्मपत्नी श्रीमती कूंजाबाई की कुक्षी से जन्म लेकर, अपने पितृगृह में सामायिक प्रतिक्रमणादि धर्मग्रन्थों का पठन तदनुशीलन करती हुई, स्कूल की ७वीं क्लासमें चारों इल्मों में पास होती हुई विनय विवेक सदाचार-सुशील-शांति आदि गुणों से भरी हुई युवावस्था में कलकत्ता निवासी श्रीयुत लाभचन्द्रजी माडियेके साथ ब्याही गई थी। सुयोग्य गृहिणी पदको सुशोभित करती हुई नवपदकी ओली, अष्टा पद की ओली पञ्चमी तप, पचाणुव्रत आलोचना शत्रुंजयादि महातीर्थों की यात्रा इत्यादि अनेक धर्मकृत्यों को करती हुई दो महीने के विमलचन्द्र नामक बालक को अपना स्मरण चिन्हरूप छोडती हुई वि० स० १९८५ के आश्विन शु० १४ के दिन १८ ह वर्ष की अल्पवय में समाधि से असार ससार को छोडकर, सूक्ष्मकाय-यश कायसे अमरत्व को पाई श्रीमती का सादगी से, स्वाभाविक शांति से भरा फोटू उपयुक्त विषय की साक्षी दे रहा है। प्रत्यक्ष विषये किं प्रमाणम् अत मलम्।

जीवनी लेखक—

रतनगढ़ निवासी वैरागी धोलामल सींघी

* समर्पण *

घोरतपस्वी पूज्यपाद प्रात स्मरणीय
श्रीमत् छगन सागरसद्गुरु का
सेवा में सादर

ज्ञानी महाध्यानी तपस्वी पूज्य गुरुवर आपका
स्वर्गीय दिन ही है स्मरणसाधक विनाशक पापका।
इसमें सदा से तुच्छ में अत्युच्च भावों से भरा
कुसुकेलि रसरेली समर्पण आप सेवा में धरा॥

दया बुद्धि से देव ! स्वीकारें आशा यही।
दर्शन दें स्वयमेव हृदय भावना मैं कही॥

भवदीय दासानुदास—
कवीन्द्र

विक्रमाब्द—१९८८
भाद्रशुक्ल ६

* श्री सुखसागर सद्गुरुभ्यो नमः *

॥ कवीन्द्र केलि ॥

* अपर नाम *

। गहूली संग्रह प्रथम भाग ।

। श्री गौतम स्वामि गुण वर्णन गहूली । १ ।

। राग—माढ़ावरो ।

नित्य नमो हितकारी रे चेतन ! गुरु गौतम गणधारी ।टेर।
लब्धि निधान ज्ञानगुणागरि, विघ्न विनाशनकारी ।
गुरु अनुरागी परम विरागी, सुमतिजन सुखकारी रे। चेतन।१
सरल सुयुक्ति साधन शक्ति, अद्भुत गुण अधिकारी ।
निरभिमान विधान विधायक, क्षायक भाव विहारी रे ।चे०।२।
जिनने केवल ज्ञान का देवे, दान महा उपकारी ।
शिष्य हुए वे निश्चय करके, होते शिवमग चारी रे । चे० ।३।
गुणसागर भगवान प्रभु थी, वर्द्धमान पटधारी ।
पृथिवी नन्दन वन्दन करते, हार मारमहारि रे । चे० ।४।

श्रुतदेवी जाके मुख पङ्कज, खलत विविध प्रकारी ।
हरि कवीन्द्र नमो गुरु गौतम, वर्ते मङ्गलाचारी रे ।चै०। ५ ।

। श्री पूर्वाचार्य गुरु स्मरण गहूली । २ ।

। राग—माढ ।

नमो शिरनामी गुरु गुणधामी, शासन के शिरताज । टेर ।
पावन जीवन गौतम स्वामी, गणधर गुणमणिमाल ।
मात काल में नाम लिये से, प्रकटे मङ्गल माल । नमो० ।१।
अन्तिम केवलि जम्बूस्वामी, मुक्ति रमा वर कान्त ।
प्रभव प्रभु प्रभृति श्रुतकेवली, देवें बोध नितान्त । नमो० ।२।
महागिरि आदि दश पूरवी, प्रवचन माणाधार ।
देवर्धिगणि जिनभद्रादिक, आगम संग्रहकार । नमो० ।३।
श्रीसिद्धसेन हरिभद्रप्रभु, शासन थम्भ समान ।
ज्ञानी ध्यानी पूर्ण तपस्वी, दिव्य अतिशयवान् । नमो० ।४।
नवाङ्ग वृत्तिकार हुए प्रभु, अभयदेव सूरी द ।
श्रीजिनवल्लभ सूरि किये थे, खंडित पाखंड वृन्द । नमो ।५।
दादा श्रीजिनदत्त सुबोधक, श्रावक सब विशेष ।
आज भी जाके पुण्य प्रताप, भाग विघ्न अशेष । नमो० ।६।

उनके पट्ट परम्पर में हुए, गणि क्षमाकल्यान ।
संवेगी सुविहित गीतारथ, करते स्व पर कल्यान । नमो० ।७।
यथा नाम गुणों के धारक, गणनायक अभिराम ।
श्रीसुखसागर सद्गुरु स्वामी, दुखियों के विसराम । नमो० ।८।
भाग्यवान भगवान गुरु थे, भव वन सारथवाह ।
दिव्य तपस्वी छगनसागरगुरु, हरें त्रिलोक का दाह । नमो० ।९।
गुरु गणनायक श्रीहरिसागर, समकित के दातार ।
नवनिधि सुरतरु वाँछित पूरण, आतम के हितकार । नमो० ।१०।
गुरु पदसेवा अमृत मेवा, दे आनद अपार ।
गुरु गुण कीर्तन दिव्य कवीन्द्रका है शाँति भण्डार । नमो० ।११।

। ज्ञान का खजाना गहूली । ३ ।

। राग—गज़ल ।

गुरु जी ज्ञान का भारी, खजाना खूब खोले हैं ।
नहीं है लूटने वाला जिसे लेना हो ले लेवें । टेर ।
क्षणिक इस जिन्दगानीमें, नहीं फिर हाथ आने का ।
अमोला मान से परा जिसे लेना हो ले लेवें । १ ।
समय पाकर अगर भूले, भवो भव दु ख होने का ।
चिताया है इसीसे कि जिसे लेना हो ले लेवें । २ ।

हृदय भंडार में इसका जरा भी जो गया हिस्सा।
समजलो पार है वहां जिसे लेना हो ले लेवें। ३।
उभय भव में हमेशा से, चलन चलता इसीका है।
समजमें आगया हो तो, जिसे लेना हो ले लेवें। ४।
इसे जल चोर अग्नि या, किसी का भी न खतरा है।
सदा आनन्द देता है जिसे लेना हो ले लेवें। ५।
खजाने के निकट में ही, भरा है दिव्य सुखसागर।
त्रिविध सन्ताप हरता है जिसे लेना हो ले लेवें। ६।
वही भगवान है जिसके हृदयमें यह खजाना है।
स्वयं भगवान होने को जिसे लेना हो ले लेवें। ७।
मुनिगणनाथ हरिसागर, गुरु हैं पूज्य उपकारी।
दया ला दान करते है जिसे लेना हो ले लेवें। ८।
सुनो संसार भर में भी, न इसमें सार है कोई।
कवीन्द्रोंने इसे गाया जिसे लेना हो ले लेवें। ९।

। सद् गुरु सेवा फल गहूलो । ४ ।

। राग—मेरो गली आजारे सावरिया मेरा गली आजा
भजु घरा आ महिरा खिवा जा रे सावरिया।
सेवो गुरु परम कृपाल भवियां, सेवो गुरु परम कृपाल भविय
॥ टेर ॥

गुरु कृपा थकी जीव सुगति की
वरे विजय वरमाल भवियाँ। सेवो०। १।
हृदय तिमिरभर करे नाश गुरुवर
काटे मोह की जाल भवियाँ। सेवो०। २।
सद्गुरु सवा मीठा मेवा
देवे नित्य रसाल भवियाँ। सेवो। ३।
सद्गुरु शरणे शुद्ध आचरण
टरतो जाय जंजाल भवियाँ। सेवो०। ४।
जनम मरण जाव कीरति कवीन्द्र गावे
सद्गुरु सेवो त्रिकाल भवियाँ। सेवो। ५।

। सद्गुरु महिमा गहूली । ५ ।

। राग—पैसा प्यारो रे कि मोहन गारो रे ।

सखियाँ गावोरे काँई गावो गुरुगुणमाल सखियाँ गावोरे।टेर।
चउगति चहुटे बीचमें काँई जीव अनादिकाल। सखियाँ।१।
गुरुगमको पाये बिना काँई बहोत फिरा बेहाल। सखियाँ।२।
रागद्वेष ठगिये जहाँ काँई रहे बिछाकर जाल। सखियाँ ३।
लूटलिया धन मालको काँई बना दिया कंगाल। सखियाँ।४।
मोह महा अन्धेरमें, काँई भूला स्व पर विवेक।सखियाँ ५।

परवश पामर जीवन, कॉंइ पाये दु ख अनेक । सखियाँ ।६।
शुभ पुण्योदय जीवके कॉंइ आज मिले गुरुराज । सखियाँ ।७।
मारग दशक मोक्षके, कॉंइ मुनिजन सिरताज । सखियाँ ।८।
आलस विकथा छोड़के, कॉंइ होकर उद्यमवन्त । सखियाँ ।९।
योग शुद्धिको धारके कॉंइ सेवो गुरु निर्भ्रान्ति । सखियाँ ।१०।
पसर गुरुमुख मेघसे, कॉंइ स्याद्वाद रस रेल । सखियाँ ।११।
आज उसी रसरेल से कॉंइ पाप ताप दें ठेल । सखियाँ ।१२।
स्वारथमय संसार में, कॉंइ परमारथ का पन्थ । सखियाँ ।१३।
सुखद सरल अब होगया कॉंइ सेवत गुरुनिर्ग्रन्थ । सखियाँ ।१४।
गुरुमुखसागर विश्वमें कॉंइ हैं श्रीगुरु भगवान् । सखियाँ ।१५।
श्रीहरिसागर पूज्यहै, कांइ गणनायक गुणवान । सखियाँ ।१६।
गुरुदर्शन कीर्तन कियाँ कॉंइ आतम निर्मलहोय सखियाँ ।१७।
इस भीम्ह सद्गुरुविना, कॉंइ अशरणशरण न कोय । सखियाँ ।१८।

। सद्गुरु उपदेश महिमा गहूंली । ६ ।

। राग—लाल ख्याल देख तेरे अंगारज मन भाय ।

भैरवी

सद्गुरु उपदेश देत भविक बोध पावें ।
भविक बोध पावे सखी । भविक बोध पावे । टेर ।

भटकत भव वनमें जीव जनम मरण पावे ।
सुगुरु चरण शरण अजर अमरता निपावे । सद्० ।१।
लोह भी सुवर्ण वर्ण पारस सङ्ग आवे ।
शिष्य सुगुरु होय यदि सुगुरु सङ्ग जावे । सद्० ।२।
सुगुरु क्रोध-मान माया लोभ को भगावे ।
रविप्रकाश तिमिर नाश शीघ्र ज्यों दिखावे । सद्० ।३।
अमित सघन घन घटा का पवन ज्यों नशावे ।
सुगुरु कुमति कुगति कुटिलता को त्यों हटावे । सद्०।४।
सिन्धु लहर बढ़तु है ज्यों चन्द्र उदय भावे ।
सुगुरु सुमति सुगति सरलता को त्यों बढ़ावे । सद्० ।५।
सुगुरु निकट विकट पन्थ सहज ही लखावे ।
विनय विमल वृत्त वर विवेक प्रकट पावे । सद्० ।६।
सुगुरु पाप ताप दुःख दूर ही गमावे ।
सुखनिधि भगवान रूप आप होइ जावे । सद्० ।७।
परम धरम धीर वीर भावना सुभावे ।
सुगुरु पूज्य हरि हमारे गुण कवीन्द्र गावे । सद्० ।८।



। सद्गुरुगुण माहात्म्य गहूली । ७ ।

राग—दूर फिरा जग सारा जग सारा जग सारा
सिधगिरि सानी ना मिला ।

पुण्य उदय गुरु पाया गुरु पाया गुरु पाया करो वदना । टेर।
सद्गुरु वन्दन पाप निकन्दन, विबुध हृदय सुखदायक नन्दन
भवदव ताप विनाशन चन्दन वन्दत सखी सुखपाया सुखपाया
सुख पाया करो वन्दना । १ ।
सद्गुरु सेवा करण में हेवा, धरे होय मवरू निग नर देवा ।
पावे आतम अनुभव मेवा हरे सखी मोह माया मोह माया
मोह माया करो वन्दना । २ ।
सद्गुरु चरणा अशरणशरणा भवलकरम अरिदलनामरणा।
आधि व्याधि उपाधि हरणा, सखी सखी हो अमाया हो अमाया
हो अमाया करो वन्दना । ३ ।
सद्गुरु सङ्ग परम उमंगे सहज समाधि सरस तरंगे।
रहत सदा ही भाव निसंगे सखी निज रूप निपाया निपाया
निपाया करो व दना । ४ ।
सद्गुरु साचा निर्मल वाचा मोहराय को मारे तमाचा ।
पुद्गल बन्धन होवत काचा सखी बहिरातम हटाया हटाया
हटाया करो वन्दना । ५ ।

सद्गुरु पूरण ब्रह्मको कारण, अन्तर आतम भाव मचारण। भवोदधि दु खको दूर निवारण, कर सखी शत मुद्राया मुद्राया-
मुद्राया करो वन्दना। ६।
सद् गुरुसुखोदधिभगवानऋद्धिसिद्धि,धरेटिगपग२अनहदनवनिधि भव्यजनोंकावोधतशिवविधि, वही सखी मेरे मनभाया मनभाया
मनभाया करो वन्दना। ७।
सद् गुरु ज्ञानी सेवा मानी आतम निर्मल कारण मानी। ह हरि पूज्य सुगुरु गुणखानी, दिव्यकवीन्द्र गुणगाया गुणगाया
गुणगाया करो वन्दना। ८।

। सद्गुरु प्रार्थना गहूली । ८ ।

। राग—मेरे राम अयोध्या बुलालो मुझ ।

गुरु ज्ञानकी वातसुनायाकरें हमें समकित रत्न का दान करें।टेर।
मूल विन साखा नहीं होती हुई देखी नहीं
सम्यक्त्व विन त्यों धर्म करणी भी सफल होती नहीं।
कहो हे न वही हम कैसे कर। गु० ।।१।
माया लगी चारों तरफ कुत्रगम हमें पड़ती नहा,
मिथ्यात्व की छाया हृदयसे यों छिटकतीही नहीं,
इसे कैसे कहो अब दूर करे। गु० ।२।

साधन नहीं तैयार साधक साध्य कैसे पा सके।
नैया न है नावीक सब क्या सिन्धु जलको तिर सकें
कैसे साध्य कहो अब प्राप्त करें। गु०।३।
क्रोडों भवोंमें भी नहीं हम पूर्ण बदला दे सकें।
उपकार इतना आपका वर्णन न जिसका होसके।
एसे आप गुरू उपकार करें। गु०।४।
कामधेनु कल्पद्रुम चिन्तामणि भी तुच्छ हैं,
पालिया गर एक जो सम्यक्त्व श्रद्धा स्वच्छ है।
यही आप उपाय बताया करें। गु०।५।
संसार सागर पतित जन उद्धारकर्ता आप हैं,
सच्चे हितैषी हैं हमारे आप ही माँ बाप है।
कभी साथ न अब हम दिलमें धरें। गु०।६।
दु खहर्ता आप सुखसागर गुरु भगवान् हैं,
ज्ञान गुण भण्डार सच्चे आप हम अज्ञान हैं।
निज रूप हमें भी बनाया करें। गु०।७।
तत्त्व की श्रद्धा सुमिथ्या हरित भेदन में हरि
सागरों से भी बडी होवे हृदय में विस्तरी।
सब दिव्य कवीन्द्र सुकीर्ति करें। गु० ।८।

। कर्त्तव्य सदुपदेश गहूंली । ६ ।

। राग—जिन धर्म का डंका आलममें बजवा दिया वीर जिनेश्वरने ।

दु खहर सुखकर भविजीवोंको शुभबोध दिया श्रीगुरुवरने ।
आचार विचार सुधार करो शुभ बोध दिया श्रीगुरुवरने ।टेर
अज्ञान दशामें पड़े हुए जब आतम भान ही भूले थे ।
तब उदय दिशा के सूर्यरूप, शुभ बोध दिया श्रीगुरुवर ने ।१।
न्यायोपार्जित धनसे अपना निर्वाह करो जो सुख चाहो ।
धन प्राप्ति विघन जय हो वैसा शुभबोध दिया श्रीगुरुवरने ।२।
न्यायी जीवन जीने वाले ही उभय लोक सुखमय होते ।
अन्याय कभी न करो एसा शुभ बोध दिया श्रीगुरुवरने ।३।
द्रव्य क्षेत्र और काल भाव की नाड़ी कैसे चलती है ।
उसको अति शुद्ध सरलतासे शुभ बोध दिया श्रीगुरुवरने ।४।
आदर्श बनो आदर्श बनो कर्त्तव्य करो अपने जो हो ।
निज शुद्धि सगठन सिद्ध करो, शुभ बोध दिया श्रीगुरुवरने ।५।
है जैन धर्म का मूल तत्त्व जो स्याद्वाद उसको जानो ।
कितना विशाल है वह देखो, शुभ बोध दिया श्रीगुरुवरने ।६।
श्रीसुखसागर भगवान् गुरु, हरिसागर सम गुणधाम बनो ।
यों दिव्य कवीन्द्रोंसे वर्णित, शुभ बोध दिया श्रीगुरुवर ने ।७।



। कर्त्तव्योपदेश गहूंली ।१०।

राग—शुद्ध सुन्दर अति मनोहर माल चन्द्रमाननम् ।

कर्त्तव्यका उपदेश पाकर भूलना नहीं चाहिये ।
कर्त्तव्य ही आदर्श है आदर्श जीवन के लिये । टेर ।

परमात्मा की पुण्य पूजा नित्य करनी चाहिये ।
बिगड़ी हुई निज आत्मा को शुद्ध करने के लिये । कर्त्तव्य० ।१।

ज्ञानद्वारा सद्गुरुसे बोध, पाना चाहिये ।
निज अविद्या अपना को दूर करनेके लिये । कर्त्तव्य० ।२।

प्राणियोंमें सम अनुकम्पा रखनी चाहिये ।
चिरसल्लभ और निर्भय रूप होने के लिये । कर्त्तव्य० ।३।

पात्र गुणीयोंको सदा शुभदान देना चाहिये ।
चाहतके साथ वांछित वस्तु पानेके लिये । कर्त्तव्य० ।४।

सद्गुणी जनके गुणों में, राग रखना चाहिये ।
इन दुर्लभ दिव्य सद्गुण रत्न पानेके लिये । कर्त्तव्य० ।५।

आगम श्रवण चिंतन मननमें लौ लगानी चाहिये ।
हिताहित यथा तत्त्व है, उनको समझनेके लिये । कर्त्तव्य० ।६।

है मनुज भव इसके फल, ये सभी प्रत्यक्षमें ।
शान्त सुखसागर जनित अमृत परम रस के लिये । कर्त्तव्य० ।७।

उपदेश हरिसागर गुरु के नित्य धारण कीजिये ।
निज यशोगाथा कवीन्द्रोंसे गवानेके लिये । कर्त्तव्य० ।८।

। सद्धर्म वृक्षरक्षणोपायोपदेश गहूली । ११ ।

। राग— शुद्ध सुन्दर अति मनोहर ताल वन्देमातरम ।

श्रीगुरु सत्सङ्ग में सद ज्ञान अमृत पीजिये ।
विश्व पावन धर्म के उपदेश को सुन लीजिये ।टेर।
धर्मरूपी वृक्ष के शुभ, बीज बानेके लिये ।
आत्म भूमिका विशोधन, खूब ही कर दीजिये । श्रीगुरु० ।१।
जो विरोधी तत्व है, उन की परीक्षाको करें ।
फिर हो तदबीर से फिर, नाश उनका कीजिये । श्रीगुरु०।२।
हैं कलुषित भावरूपी, कीट कांटे पड़ को ।
शान्ति पूर्वक यत्न करके, दूर उनको कीजिये । श्रीगुरु०।३।
निश्चल बना निज इन्द्रियों को, नित्य रक्षा के लिये ।
दिव्य तार दृढ चित्त वृत्ति, बाड़ फैला दीजिये । श्रीगुरु०।४।
सींचकर निर्मल दया जल, द्रव्य भाव सर्वथा ।
यों यथोचित धर्म के तरु, वृक्ष लहरा दीजिये । श्रीगुरु०।५।
नर सुरासुरनाथ सुख सब, जानलो ये फूल है ।
मोक्ष सुख फलरूप हैं, सत्यमफ़र चख लीजिये । श्रीगुरु०।६।

अगम अनन्त अपार गुण, गावत शरद होगा नहीं।
सो स्वयं भगवान का चरण, परम सुख लीजिये। श्रीगु०
पूज्य हरिसागर गुरु मुनीन्द्र कारण हैं मिले।
धर्म का सच्चा तरीका आप उनसे लीजिये। श्रीगु० ।८।

। अहिंसा धर्मोपदेश गहूली । १२ ।

। राग—ख्याल मुद्र ताल ।

धरम धरम का मूल अहिंसा सब हृदय में धारो रे।
श्रीगुरु के उपदेश भविकजन आप विचारो रे।
कि दिल में धारो रे। टेर।
पाँचों इन्द्रिय मन-वच-काया, बल है तीन प्रकारा रे।
श्वासोच्छ्वास आयु मिल दशधा प्राण प्रकारा रे,
कि आप विचारो रे। १।
प्राणों को धारे सो प्राणी और सभी कहलावे रे।
प्राण वियोग हुए से होगा, मृत्यु जगमें आवरे।
कि आप विचारो रे। २।
जैसे अनुभव सुख दुःख का, निज आत्म को होत रे।
वैसे ही सब प्राणीमात्र को, सुख दुःख होवत रे।
कि आप विचारो रे। ३।

जीवन सब ही को प्यारा है हैं सब सुख के कामी रे । ३ ।
जीवन हर दु खदे मत हाना, दुर्गति गामी रे ।
कि आप विचारो रे । ४ ।
अपना जन्म मरण नहीं चाहें, वे पर को क्यों देवे रे ।
कार्य नहीं चाहें उसके क्यों, कारण सेवें रे ।
कि आप विचारो रे । ५
किसी जीव को किसी तरों से, कष्ट कभी नहा देना रे ।
द्रव्य भाव से नित्य अहिंसा, हो ज्यों रहेना रे ।
कि आप विचारो रे । ६ ।
कर्मोदय से दु खी जीव को, देख हृदय भर लाना रे ।
इन दु खों को दूर हटाने, शक्ति लगाना रे ।
कि आप विचारो रे । ७ ।
अन्धा लूला और अपाहिज, भूखा प्यासा होवे रे ।
इसकी रक्षा करना इसमें, द्रव्य अहिंसा होवे रे ।
कि आप विचारो रे । ८ ।
आत्म धर्म से पतित जीव को,उस ही में थिरकरना रे ।
भाव अहिंसा यही इसे कर, भव जल तिरना रे ।
कि आप विचारोरे । ९ ।
श्रीहरिसागर गुरु गणनायक भाव दया प्रगटावें रे ।
दिव्य कवीन्द्र उन्हीं की निर्मल कीरति गावें रे ।
कि आप विचारो रे । १० ।

। निज घर पर घर स्वरूप गहूंली । १३ ।

राग—जिन धर्मका डंका आलम में बजवा दिया वीर जिनेश्वरने

परघरके प्रेमका त्यागसभी, अपने घरका कुछ ख्याल करो ।
गुरुराज सुनाते हैं बार यही सुख से अपने घरमें विचरो डेरा
पर घरमें जो मर जाते हैं वे पराधीन बन जाते हैं ।
पद पद ठुकराये जाते हैं, ऐसे दु खका कैसे बिसरो । पर०।१।
पर घरमें जो सुख दीख रहा, है अन्त उसी में दु ख महा ।
ज्ञानी पुरुषोंने भदलहा कुछ ज्ञान दृष्टिस देखा करो ।पर०२।
जाना नरका में फिर है भला, पर परघर तो है बूरी बला ।
जाने पर जाय नहीं निकला, रस पड़े वहाँपर सड़ा करो ।पर०।३।
परघर धारस की टट्टी है, संताप भरी यह भट्ठी है ।
आखीर में तो वह मिट्टी है। वहाँ जा क्यों जीवन ख्वार करो ।
पर घरमें भूग विलास कर आन वालों का हास करें ।
बेहोस बना सर्वस्व हरें उनसे अब पींड छुडाया करो। पर०।४।
निज घरमें है स्वाधीनपना, जिसमें सच्चा सुख है इतना ।
कि है जिससे सर सुस सुपना अब उससुखका उपयोग करो।
निज घरमें हो सुखसागर है निज घरमें ही भगवान रहें ।
निज घरकी बात को कौन कहें, बातें उसके पथ को पकरो ।५।

हरिसागर गुरु गणनायक्क, उपदेश प्रदीप को लेकरके।
मारगदेखा अपनघरके,तब दिव्यबीन्ट सुकीर्ति करो ।पर०।८।

। सद्गुरु वन्दन गहूंली । १४ ।

राग—क्या कहूं कथन मैं मेरा नाथ क्या कहूं कथनमैं मेरा ।

भाव से वन्दन मेरा नाथ, भाव से वन्दन मेरा।
काटो भव दु ख फेरा नाथ, भावसे व दन मेरा। टेर।
तारक सद्गुरु चरण कमलमैं, कीना आज बसेरा।
मानव हू अब मैंन पाया, भवबन अन्तिम छेरा नाथ ।भाव०।१।
ससार कारागारम आया, मोह निबिड [illegible] घेरा।
सद्गुरु सूरज आज मिले तब,प्रकटा पुण्य सवेरा नाथ ।भाव०।२।
काल अनादि आतम धनका लूट करम लूटेरा।
सबलसुभटगुरुचरनशरनतें,मिटगया आज बिखरा नाथ ।भाव० ३।
अन्धकारका वाच्य गुपद् है, रूपद् वाच्य उजेरा।
अन्धकारका नाशक सो, गुरुपद् अर्थ सुहेरा नाथ । भावसे०।४।
सद्गुरु बोध सुधा का प्याला, पीवत होत अजेरा।
तत्त्व अतत्त्वोंका होता है, अपने आप निबेरा नाथ ।भावस०।५।

कपट रहित जो हो रहता है, सुखद सुगुरु पद चेरा।
सुखसागर भगवान रहे यद, शिवरमणीसे घेरा नाथ।भाव०।६।
श्रीहरिपूज्य सुगुरु सेवामें, नित निश वन्दन मेरा।
धन्य कवीन्द्र वही नर है जो, होत गुरुका पूजेरा नाथ। भाव०७।

। सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणिमोक्षमार्ग गहूंली । १५ ।

। राग—मांड ।

है जिनवाणी, गुरु गुणखाणी निरुपम सुख दातार।
हे भविप्राणि! निजहितजानी, देखो सत्त्व विचार। टेर।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण हैं, जिन वाणी का सार।
उनका ही उपदेश करें गुरु, सुन होना भव पार। हैजिन० ।१।
ये तीनों ही रत्न अमोलक पूरण सत्य स्वरूप।
पाता है सो हो जाता है, त्रिभुवन का भी भूप। हैजिन० ।२।
बाहिरके जितने हैं भूषण, दूषण से भरपूर।
रवि शशि से भी बढ़कर ये तो, भलकाते हैं नूर। हैजिन०।३।
नरभवमें निज बीरज योगे, भलकावे सो धन्य।
परमातम पद पा सुख भोग, सहज समाधि जन्य। हैजिन०।४

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण की पूरण प्राप्ति यही।
है ससार असार उसी में केवल सार सही। हैजिन०।५।
इन्ही तीनों के धारक ही हैं सुखसागर लयलीन।
ये ही हैं भगवान् उन्हीके मुक्तिरमा स्वाधीन। हैजिन०।६।
श्रीहरिसागर गुरु गणनायक, के उपदेश यही।
तन्मय जीवन में है कीरति, दिव्य कवीन्द्र कही। हैजिन० ।७।

। समकित लक्षण गहू लो । १६ ।

राग—हो प्रातम जी प्रीत की रीति अनित्य तजी चित्त धारिये।

सुन हे वहेनी ! गुरुवर दें उपदेश हृदय में धारना।
उससे जगमें फिर अपना उत्तम जीवन निर्धारना। टेर।
नव तत्वों की पहिचान करो उनमें निश्चल श्रद्धान धरो।
समकित गुणठाणे में विचरो। सुन हे वहेनी ? ।१।
समकित ही सार सदा जानो, उससे ही धर्म क्रिया ठानो।
ता विन मत धर्म सफल मानो। सुन हे वहेनी ? ।२।
समकित के लक्षण पाँच कहे, अपराधी पर भी न क्रोध वहे।
उपशम समता में नित्य रहे। सुन हे वहेनी ? ।३।

नर सुर सुख हैं सब दु खभरे, अक्षयसुख मोक्षकी चाह करे।
सवेग यही दिल बीच धरे। सुन हे बहेनी ? ।४।
ससार को कारावास लखे, वासों निर्वेद सदैव रखे।
धर्मामृत रस को नित्य चखे। सुन हे बहनी ? ।५।
लख दीन हीन दुखिये प्रानी, उनकी अनुकम्पा दिल ठानी।
करे रक्षा निस निज हित जानी। सुन हे बहेनी ? ।६।
जिन कथित बचन सबही सच हैं, मिथ्या मतिका जहाँ लेश न है।
आस्तिकतामें यों रग रहे। सुन हे बहेनी ? ।७।
समकित सुखसागर का तट है पहोंचे लय होते सङ्कट है।
भगवान यहाँ मिलते झट है। सुन हे बहेनी ? ।८।
गुरुहरिसागर गणनायक है, सुखकर शुभ समकित दायक है।
देते है बोध जो लायक हैं। सुन हे बहेनी ? ।९।
जिनने गुरु सुरतरु पाये है समकित वाँछित फल खाये हैं।
वे ही कवीन्द्र मन भाये है। सुन हे बहेनी ? ।१०।

। समकित दूषण परिहारोपदेशगहूली ।

राग—मेरे राम अयोध्या बुलालो मुझे।

निर्मल समकित का ऐसे तू धार सखी,
पच दूषण दूर निबार सखी। टेर।

वीतरागी के विमल सिद्धान्त में शङ्का कभी ।
करना नहीं बस मानना हम अज्ञ क्या जानें सभी ।
गुरुगम का तू पाके विचार सखी । निमल० ।१।
सूक्ष्म अर्थों से भरे सिद्धान्त हैं संसार में ।
फिर शक्ति हम कैसे करें उनके सभी निर्धार में ।
उनसे जोड़ तू बुद्धि के तार सखी । निर्मल० ।२।
ज्ञानावरणी कर्म का क्षय हो सभी भ्रम-भय में ।
सद्रूप होगा ज्ञान भी बस सर्वथा उस पलमें ।
यातें तू न चपलता धार सखी । निर्मल० ।३।
काँक्षा कुमत की वाँछना है राग द्वेष जहाँ भरे ।
हो रागद्वेषाधीन हो संसारमें जनमें मरे ।
ऐसी काँक्षा को चित से टार सखी । निर्मल०।४।
है विचिकित्सा यही की धर्मफल है कि नहीं ।
इसका हृदयसे दूर कर सुन धर्मफल है ही सही ।
यातें धर्म में भाव सुधार सखी । निर्मल० ।५।
मिथ्यात्विगुण की भी प्रशंसा भूलकर करनी नहीं ।
है विष मिला जो दूध वह क्या प्राण को हरता नहीं ।
यातें ऐसी प्रशंसा बिसार सखी । निर्मल० ।६।

मिथ्यात्वि जन की सङ्गति को दूर ही से त्यागना ।
जिससे लगे सम्यक्त्व की शुभ वासना को दाग ना ।
निज मङ्गति शुद्ध स्वीकार सखी । निर्मल० ।७।
पूर्णता को पा लिया उनके लिये अपवाद हैं ।
वे जो करें करते रहो वे सर्वथा आजाद हैं ।
हममें न है वैसा विचार सखी । निर्मल० ।८।
अति दिव्य सुखसागर महा भगवान हरिसागर गुरु ।
उपदेश देते हैं यही इसमें प्रमाद मा कुरु ।
यही साधु कवी ट्रीं का सार सखी । निर्मल० ।९।

। श्रावक धर्मोपदेश गहूली । १८ ।

राग—महावीर तुम्हारी मोहन मूरति देखी मन ललचाय० ।

उपदेशें सुगुरुधर्म उभय भव भय का नाश करे । टेर ।
दुर्गति पड़तोंको रखे, सुगति को फिर जो वखे ।
वह धर्म कहा निष्पखे, जिसमें दो हैं भेद परे । उपदेशें० ।१।
गृहि यतियों ने सुखकारा, वह देश सरव से धारा ।
होते गृहस्थ के आचारा, जिनका वर्णन यहाँ करे ।उपदेशें०।२।
जीवादिक तत्त्व विचारे, निज श्रद्धा को निर्धारे ।
नित वर्ते मार्गानुसार, समकित दर्शन शुद्ध धरे । उपदेशें०।३।

त्रस निरापराधी प्राणी, की सेच्छा न करे हानी।
निज शक्तिको पहिचानी, स्थूल अहिंसक मान धरे। उपदेशें० ४।
इत्यादिक बारह व्रतको, पालें भरें सुकृत को।
सेवें श्रमणोंके पदको पचम गुणठाणे विचरें। उपदेशें० ५।
उत्कृष्ट भावके धारी, बारम देवलोक विहारी।
क्रमसे होवे शिव सचारी, आत्मिक अक्षय सौख्यवरें। उपदेशें० ६।
सुखसागर श्रीभगवाना, गुरु हरिसागर गुणवाना।
उपदेश करें चितलाना, वर्णन दिव्य कवीन्द्र करें। उपदेशें० ७।

। बारह व्रतकी गहूली । १९ ।

। राग—धनासिरी ।

बारह व्रत ये जान सखीरी ? बारह व्रत ये जान।
धारत होत कल्यान। सखीरी। टेर।
जान बूझकर विन अपराधे, प्राणातिपात न ठान। सखी०।
कन्या गो-भू आदि विषयमें, त्याग अलीक विधान। सखी०।१।
राजनियमसे दण्डित है वह, छोड़ अदत्तादान। सखी०।
इह परलोक विडम्बन हेतु, तज मैथुनसे तान। सखी०।२।

निज धन धान्यादि परिग्रहका, कर लेना परिमाण । सखी०।
दशों दिशायें जाने अनेक नियममें रख ध्यान । सखी० ।३।
भोगोपभोग प्रमाण में निशदिन, हो रहना सावधान । सखी०।
पापोपदेश प्रचार न करना, अनर्थ दंड प्रधान । सखी० ।४।
दो घड़ि राग द्वेष बिना करो, सामायिक सध्यान । सखी० ।
दिग् व्रत छूटें नियमित करना, देशावकाशिक मान ।सखी०।६।
पर्व तिथिमें पौषध पुष्टि उपवास पूर्वक जान । सखी० ।
अतिथि संविभाग वही जो दियासुपात्र में दान । सखी०। ६ ।
पचाणुव्रत हैं तीन गुणव्रत, चउशीक्षा पहिचान । सखी० ।
सब मिल होते श्रावक के ये, बारह व्रत सुमहान ।सखी०।७।
समकित पूर्वक आराधन कर, पहुंचे अमर बिमान । सखी०।
क्रमसे सुखसागर का पाकर, होते हैं भगवान । सखी० ।८।
श्रीहरिसागर गुरु गणनायक देते सद्व्रत दान ।
शिष्य कवीन्द्र व्रताराधकके करते कीरति गान। सखी० ।९।

। गुरुविनय गहूंली । २० ।

। राग—ज्ञानादिक गुण सपदारे तुज अनन्त अपार।

सुनाव हे सखी ? हितशीक्षा श्रीगुरुराज ।
आतम परिणत जो करें सखी पावें अविचलराज ।टेर।
मूल कहा जिनधर्मका सखी, विनय जिनेश्वर देव ।
प्रकटें विनयी जीवको सखी, सद्गुणगण स्वयमेव । सुना० २

अभ्यन्तर तप भेद है सखी, विनय सदा सुखकार।
कर्म सघन वन दाहमें सखी, अद्भुत रूप तुषार। सुनावें०।२।
नामादिक निक्षेपसे सखी, विनयके चार प्रकार।
भाव विनय के धारते सखी होते हैं बड़ा पार। सुनावें०।३।
उत्तराध्ययन सुसूत्रमें सखी, प्रथमाध्ययन विशेष।
विनय स्वरूप विचारते सखी न रहे लेश क्लेश। सुनावें०।४।
मन वच काया शुद्धि से सखी, गुरु आज्ञा अनुकूल।
आचरणा को धारते सखी, शूल बने सब फूल। सुनावें०।५।
गुरु ईर्ष्या निन्दा कर सखी बतावे उतपात।
ऐसे अविनयी आतमा सखी, खावें जम की लात। सुनावें०।६।
जो हैं विनयी आतमा सखी रहते निरभिमान।
सुखसागर भगवान ने सखी, त्रिभुवन तिलक समान। सुनावें०।७।
श्रीहरिपूज्य सुगुरु मिले सखी, करना विनय अपार।
दिव्यरवीन्द्र सभी करें सखी निर्मल कीर्ति प्रचार। सुनावें०।८।

। नामस—समतोपदेश गहूली ।२१।

राग—धन हो ऋषभदेव भगवान युगला धर्म निवारन वाले।

सुनलो सुनलो गुरुउपदेश जो निज घोर अविद्या टाले। टेर।

हैं उलट वरण दु:खखान, दें सुलट वरण शिवदान ।
तामस समताको लो मान दोनों के हैं पन्थ निराले।सुनलो०१।
हैं उलट सुलट दो व्यक्ति, गुण बाधक साधक शक्ति ।
क्रमसे बन्धन और मुक्ति के हैं ये देने वाले । सुनलो० ।२।
हैं उलट सुलट दो चालें, सुगति कुगति से बचालें।
है भारी भद्र विचालें, माने सारे मतवाले । सुनलो० ।३।
है उलट सुलट दो चक्कर, लेते जो इनसे टक्कर ।
वे लख चौरासी चक्कर के खाने न खाने वाले । सुनलो०।४।
हैं उलटवरण गुणघाती तामस है मोह का नाती ।
होता है नाना भाँती, त्यागें शिव जाने वाले । सुनलो०।५।
जिन सुलट वरण को जाना थ सुखसागर भगवाना ।
पावें निज द्रव्य खजाना, हरि पूज्य विशद गुणवाले ।सुन।६।
है सुलट वरण जयकारी, समता सुमतिजन प्यारी ।
करें कीर्ति कवीन्द्र अपारी, पर पार न पाने वाले । सुनलो०।७

। भाव स्तव गहूंली ।२२।

राग—मारु—कहो सब जय २ श्री महावीर

नमोरे नमो श्रीगुरु गुण भण्डार ॥ टेर ॥

भाव स्तव के पावन पदका, अरथ दिखावन हार ।
वीतरागगुण बोध विधायक, निजगुण निर्मलकार । नमोरे०।१।

श्रमण ऐश्वर्यादिक पूरण त्रिभुवन जनआगार।
श्रीमहावीर जिनेश्वर स्वामी आदिकर अवतार। नमोरे० ।२।
तीर्थङ्कर सहसम्बुद्धात्मा पुरुषोत्तम सुखकार।
पुरुषसिंह मवर पुण्डरीक गन्धहस्ति गुणधार। नमोरे० ।३।
लाकोत्तमवर लोकनाथ नित योग क्षेम करतार।
यथावस्थित वस्तु प्रकाशक लोक प्रदीपाकार। नमोरे० ।४।
भावि भाव विभासन समरथ केवल ज्ञान मचार।
लोक प्रद्योतक भयहर अभयद, चक्षु श्रुतदातार। नमोरे० ।५।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरणमय मारग देशकसार।
शरणागत प्रतिपालक सुखकर अद्भुत रत्नाकार। नमोरे० ।६।
श्रुत चारित्र धरम उपदेशक धरम सारथि मनुहार।
गुण सम्पन्न विशेषण वाले वीर प्रभु जयकार। नमोरे० ।७।
श्रीजिनगुण निज आतम के गुण दोनों हैं इकसार।
पर विभाव परिणतिके कारण अन्तर पड़ा अपार। नमोरे० ।८।
परपरिणतिज निजपरिणतिमज गुरुउपदेशविचार।
ध्यान लग्नि परिपाक हुए से होवेगा निस्तार। नमोरे० ।९।
श्री भगवती जी सूत्र विषयमें, यों भाषे गणधार।
श्रीहरि पूज्य गुरु भवि बोले होत कर्मान्ध्रोद्धार। नमोरे० ।१०।

पर्याप्ति स्वरूप गहूंली । २३ ।

। राग आशावरी । अवधू सो जोगी गुरु मेरा ।

भाव वन्दों वार हजारी श्रीगुरुवर उपकारी रे भावें० । टेर।
आतम तत्व परम हितकारी; सत्य स्वरूप दिखाया ।
कर्मजनित पर्याय विचार अद्भुत बोध दिपायारे । भाव० ।
निज आहार शरीरादिक की, पर्याप्ति छह पावे ।
कर्मोदय से फँसे आतम, श्रीगुरुराज बतावेंरे । भाव० ।२।
निज उत्पत्ति स्थानक पहुँचा, जीव लहे आहारा ।
ताको खल रस रूप करे वह, पर्याप्ति आहारारे । भावें० ।३।
जिस शक्ति से रसकी परिणति सात धातु बन जावे ।
शरीर पर्याप्ति कहते जासों जीव शरीर बनावे रे । भावें ।४।
जात हाता इन्द्रिय रूपे, धातुन का परिणाम ।
इन्द्रिय पर्याप्ति ये जाना, करण पर्याप्ति तमामरे । भावें ।५।
श्वासोछ्वास तथा भाषा मन योग्य सुपुद्गल दललें ।
तत्तद्रूप परिणत जासों, छोड़ आलम्बन लेरे । भावें ।६।
उस उस नाम हैं पर्याप्ति, जीव शक्तियाँ जानों ।
पूरीकर पर्याप्ति मरते, लब्धि पर्याप्ता मानोरे । भावें०।७।
चउ एकेन्द्रिय विकल असन्नी के पर्याप्ति पंच ।
छह सन्नी पंचेन्द्रियके यों, हैं पर्याप्ति प्रपंचरे । भावें० ।८।

ामय मात्र आहार पर्याप्ति, अन्तर मूहरत पच ।
नेजनिज शक्ति पूरण करते जगमें नर तियचर । भावे ८ ।९।
ऐते आत्म निज गुणमें जो सारी शक्ति लगावे ।
ारिपूज्य विशद गुण उनके, दिव्यक्वीन्द्र सुगावेरे । भावे ८ ।१०।

श्रीमहावीर समवसरन गहूली । २४ ।

जिल्ले की दशी ।

त्रिभुवन तारक वीरजी जग उपकारीरे जयकारी जिनराज ।
त्रिभुवन तारक वीरजी जग उपकारीरे सुजाण । टर ।
चउद सहस शुभ साधु महाव्रत धारीरे हितकारी महाराज ।।
स यम साधक साधवी छतिस हजारीरे सुजाण । १ ।
विद्यमान जिन शासन उज्जलकारीरे अनगारी सिरताज ।
भु आज्ञा के पालक उग्र विहारीरे सुजाण । २ ।
ामानुगाम विचरता पावनकारीरे अघहारी शिवसाज ।
ायगृह नगर सुगुणसिल चैत्यमझारीरे सुजाण । ३ ।
विरचे समवसरन योजन विस्तारी रे सुखकारी सुरराज ।
वउमुखतोरण दृढ धजा मनुहारी रे सुजाण । ४ ।
त्नसिंहासन पूरव दिशि, सुखकारीरे गुणधारी जिनराज ।।
ारह परिषद् को उपदेशे भारीरे सुजाण । ५ ।

चतुरङ्गी निज सेना को सिणगारीरे नहिं पारी नरराज।
श्रेणिक वन्द सविनय भाव सुधारी रे सुजाण । ६ ।
करे मुक्ताफल साथियो मङ्गलाचारीरे गुणधारी धनराज।
गावें चिलणादिक पटराणी सुन्दरी सारीरे सुजाण । ७
समकित सुमतको लहे शिवकारीरे नरनारी समाज।
आतमगुण उजवाले बोध विचारी रे सुजाण । ८ ।
जिनवाणी भवसागरमें निस्तारीरे दुखहारी वरपाज।
पाकर परिषद निकसी दिशि अनुसारीरे सुजाण । ९ ।
श्रीहरिपूज्य प्रभुताणी बलिहारीरे जयकारी महाराज।
दिव्य कवीन्द्रे कीरति नित्य उचारीरे सुजाण । १० ।

श्रीगौतमस्वामीकी गहूली । २५ ।

सीता माता की गोदीमें हनुमत डारी मूदड़ी इस रागमें।

वन्दो वीर विभु के शिष्य प्रथम गण धार कोरे।
चउविध संघ सुनायक इन्द्र भूति अणगार को। टर।
जिनका गोतमगोत्र पवित्र।
जगमें जो आदर्श चरित्र॥
धार मात हाथ शरीर उच्च विस्तार को रे। वन्दो०।१।

जिनका समचौरस सठान ।
स्वरूप लक्षण परम प्रधान ॥
धारे अद्भुत रूप अनूप प्रवर आकारको रे । वन्दो० ।२।
जिनका वज्र ऋषभ नाराच ।
सहनन अस्थि सघ निकाच ॥
न लहें कोई भी सुरनर जिनके बल पार को रे । वन्दो०।३।
जिनका वर्ण सुवर्ण समान ।
दर्शन दे आनन्द महान ॥
हरते विरत हृदयमें अनहद प्रेम मचार को रे । वन्दो०।४।
जिनका उग्र तपोमय जीवन ।
करत शासन की परभावन ॥
पाप मय हरते धरते प्रतिदिन शुद्धाचार का रे । वन्दो०।५।
प्रात काल में जिनका नाम ।
जपते हरता विघ्न समाम ॥
करते मगलकारी नित्य महोदय सार को रे । वन्दो० ।६।
श्री हरिपूज्य गुरु गुणवान ।
गौतम स्वामी का शुभध्यान ॥
करत पावे दिव्य कवीन्द्र भवोदधि पारकोरे । वन्दो० ।७।



श्री गौतम स्वामी जी की गहूली । २६ ।

रावणन शक्ति मारी हरके तान तान तान इस रागमें ।

सेवो मेम धरीन गौतम गुरु गणधार धार धार ।
जानों तीन भुवनमें सद्गुरु सेवा सार सार सार । से
जो करम गहन वन भारी के दहन समर्थनकारी ।
देदीप्यमान तपधारी, वदो वार वार वार । सेवा० । १।
तप तपकर कर्म तपावे, निज आतम को यों तावे ।
पापों क अछूत बनावे, जो इकवार तार तार । सेवा० । २
आशा सा दोष महारी, भीरुजन को भयकारी ।
सर्वोच्च कोटि सचारी तप आधार धार धार । सवो० । ३ ।
जो परीषहादिक दुश्मन, नाशन में है निर्दयमन ।
आतम निरपेक्षी वर्तन धाराचार चार चार । सेवो० । ४ ।
जो घोर गुणों को धारे तप घार सदा विस्तार ।
अतिघोर ब्रह्म व्रत सारे, भोग विसार सार सार । सेवो०
सत्कार विहीन शरीरा, सक्षिप्त विपुल गम्भीरा ।
तेजो लेश्या गुण हीरा, अपरम्पार पार पार । सेवो० ।६।
चउदस पूरवी चउज्ञानी सर्वाक्षर योग विधानी ।
अव्याक्षर पून वाणी है ओंकार कार कार । सेवो० ।७।

नाति निकटे अति दूरे, सविनय शुभ ध्यान मन्रे ।
मस्तवार चरण चित धूरे, नित अनगार गार गार । सेवो०।८।
उत्तरदुत्तरानरे धारी, नियमित दृष्टि विस्तारी ।
सम्यग्ध्यान सुकोठ विहारी तज ससार सार सार ।सेवो०।९।
श्री हरि पूज्य गुरु गौतम हैं, सेवत हरते अघतम हैं ।
फिरता दिव्य कवीन्द्र सुगम है, बेड़ापार पार पार सेवो०।१०।

श्रीगौतम स्वामि जी की गहूली । २७ ।

अय दिल प्रभु की याद में गाफिल ना हो जरा इस राग में ।

श्रीगौतम तत्त्व विचारणामें भाव यों धरा । टेर ।
दृढ श्रद्धा है जिन्हों का, तत्त्वों के मति ।
फेरभी छाद्मस्थिक भाव में, संशय सा है भरा ।श्रीगौतम०।१।
"चलमाण चलिये" सूत्र में जो अर्थ है रहा ।
उसमें है काल विचार विषयिक संशय दिलजरा।श्रीगौतम०।२।
कौतुहल भी जिनको हुआ है फैस यों सही ।
श्रीवीर प्रभु निज ज्ञान सेती निश्चय है करा । श्रीगौतम०।३।
पहिले न थी श्रद्धा वही उत्पन्न है हुई ।
उत्पन्न श्रद्धा भाव जिनके है हुआ हरा । श्रीगौतम० । ४ ।

ज्ञान श्रद्धा में तथा उत्पन्न श्रद्धा में ।
है कार्य कारण रूप भारी भेद सो भरा । श्रीगौं०।५।
श्रद्धा संशय कौतुहल वाले गौतम स्वामी ने ।
श्रीवीर प्रभुके पासमें जा प्रश्न यों करा । श्रीगौं०।६।
श्रीहरि पूज्य प्रभु जग जीवन पावन वाणी से ।
मुकवीन्द्र पदित गौतम स्वामी संशय को हरा । श्रीगौं०।७।

सद्गुरु बोध प्याला गहूंली । २८ ।

। दाड़िया रंग के राग में ।

पीलो न प्रेम धरी रे सुभवियां, पीलो न प्रेम धरी ।
सद्गुरु बोध सुधा का प्याला, पीलोने प्रेम धरी० । टेर ।

अजर अमर पद पावो नियमम जानो न जूठ जरी ।
रे सुभवियां पीलोने ।१।
लोक अलोक के विविध स्वरूप को, देखो प्रत्यक्ष करी ।
रे सुभवियां पीलोने० ।२।
हृदय नयन निज निर्मल द्वारे घोरांधकार हरी ।
रे सुभवियां पीलोने० । ३।

सार सागर दुःखों का आकर, जल्दी से नाओ तरी ।
रे सुमवियाँ पी लोन० ।४।
महा भय मेरवटा वह, जाने सभी विखरी ।
रे सुमवियाँ पी लोन० ।५।
हद आतम शाँति समर्पे, ताप समाप हरी ।
रे सुमवियाँ पी लोन० ।६।
मस्य शीघ्र" बोध न भूलो, गतकाल न आवे फरी ।
रे सुमवियाँ पी लोने०।७।
भगवान हरि पूज्य गुरु सेवो, वाणी कवीन्द्र उचरी ।
रे सुमवियाँ पी लोन० ।८।

प्राणी प्रबोध गहूली । १९ ।

। राग—माढ ।

णी सुनले गुरु उपदेश प्राणी सुनले गुरु उपदेश ।
य वाणी सुधाका लेश हरे सब कराल क्लेश । प्राणी०।टेर।
म क्रोध मद लोभ मान हर्ष अंतर शत्रु छह ।
द करके निग्रह करते, पटकें नीचा वह ।
कब तू चेतेगा अर कह । प्राणी०।१।

काम कहा वह जो होता है, विषयों से सम्बन्ध
त्याग अरे तू शीघ्र उस अब, क्यों करता प्रतिबन्ध ।
फोकट होगा है तू अन्ध । माणी० ।२।

अन्तर आतम सद्गुणदाहक, अद्भुत अग्नि रूप ।
निज पर को हानिकर होता, दबो द भर रूप ।
ऐसा है रे क्रोध स्वरूप । माणी० ।३।

औरों के गुणको क्यों निन्द ईर्ष्या से सानन्द ।
मदगद सन्निपात घिरा तू क्यों करता आनन्द ।
कब तू त्यागेगो यह फन्द । माणी० ।४।

ग्रह रूप परिग्रह उसका योग्य सदा है त्याग ।
राग भरे तू त्याग करे नहीं, लोभ समुद्र अथाग ।
अब तो चेत अरे महा भाग माणी० । ५ ।

जात्यादिक जो आठ मकारे, निज गुण रोधक दुष्ट ।
मान महागिरि है उसपे चढ़ क्यों सहता है कष्ट ।
गिरकर आखीर होगा नष्ट माणी ०। ६ ।

भव वर्द्धक साधन को साधे, विषय कषाय अनेक ।
उनहीं में तू हर्ष मनावे भूला आत्म विवेक ।
ऐसी क्या है तेरी टेक । माणी०। ७ ।

सुख सागर भगवान् सदा हरि सागर गुण गम्भीर ।
चरण शरण को दिच्य कवीन्द्रो, धारो ह्राकर धीर ।
जिससे पहुंचोगे भवतीर । मरणी० । ८ ।

सद्गुरु सगति गहू लो । ३० ।

। पधारो म्हारा मन्दिरो पे जे मारा ओर न० इस राग मे ।

सद्गुरु सग समकित रङ्ग सुहावना ।
अङ्ग लग तन राग द्वेष होय नाश जो ।
अनुपम आत्म ज्याति प्रकट श्री कट
माया वल्ली रहे न पर की आश जो । स०१।
काल अनादि पुद्गल सगी आतमा
गुरु गम विन तज निज घर परघर भटकानो ।
जनम मरणके दुस्सह दुख को भोगता
विविध गतिमें वेष धरा निज नटका जो । स०२ ।
आर्यदेश आरजकुल श्री जिन धर्म की
प्राप्ति हुई है अब कर्त्तव्य हमारे जो ।
श्रीसद्गुरु आधीन हुए सब सौंवले
माया शल्य विहीन नृतिमे धारें जो । स०३ ।

स्थूल अणुव्रत गुण व्रत शीक्षा व्रत धरे
क्रमसे जिनकी बारह संख्या हावे जो।
सुव्रत धार विधि पूर्वक गुरु पास में
देशविरति पचम गुणठाणे रहेवेंजो। स०४

परमगुरु प्रभु वीतराग महावीर थे
उपासकांग मे बारह व्रत के धारी जो।
निरतिचार जीवन मतिमा धारी हुए
आनंदादिक श्रावक जाउ बलिहारी जो। स०

सद्गुरु तारें तिरें स्वय भवसिंधु से
कर करावे सदा क्रिया निष्पाप जो।
सम्यक् तत्व निरूपक साधु धर्मके
लीन रहें नित हरें जीव सताप जो। स०६

सुखसागर भगवान् गुरु हरि पूज्य हैं
परम महादय पथ के सारथ् वाह जो।
पक्षपात विरहित हितकारक लोक के
दिव्य कवीन्द्र सुवर्णित वचन प्रवाह जो।स०

चौमासी व्याख्यान गहूंली । ३१ ।

। राग—पनिहारी ।

मङ्गलमय दिन आजका सुन साहेली,
आरम्भ वर्षाकाल साहेली ।
दर्शन श्रीगुरु मेघ के सुन साहेली,
करके हों खुश हाल साहेली । टर ।
पाप ताप ऋतु नाश से सुन साहेली,
फैला शान्ति समीर साहेली ।
दुष्ट रजा राशि मिटी सुन साहेली,
पाकर बोध सुनीर साहेली । १ ।
धर्मलता लहरा गई सुन साहेली,
भविजन हृदयोद्यान साहेली ।
भववनथाके जीवका सुन साहेली,
है आराम महान साहेली । २ ।
मोह महोदधिशोष को सुन साहेली,
पाया आप ही आप साहेली ।
सामायिक समता नदी सुन साहेली
हरे सभी सताप साहेली । ३ ।

आवश्यक आतम क्रिया सुन साहेली,
खेती सुन्दर रूप साहेली।
भव्य जीव मस्त रवैं सुन साहेली,
प्रकटे धान्य अनूप साहेली। ४।
पौंषध पौंधे धर्म के सुन साहेली,
देत हैं फल फूल साहेली।
नर सुर शिव सुख रस भरे सुन साहेली,
सहज समाधि मूल साहेली। ५।
प्रभु पूजा की नाव से सुन साहेली,
सुखसागर के बीच साहेली।
लीला में लयलीन हो सुन साहेली,
हर करम मल कीच साहेली। ६।
श्रीहरि सागर सद्गुरु सुन साहेली
है शुभ मेघ समान साहेली।
दिव्यकवीन्द्र सुकीर्ति की सुन साहेली,
यों नित छेड़ें तान साहेली। ७।

चौमासी व्याख्यान गहूंली । ३२ ।

। राग—नाग जीकी । मल्हार ।

चौमासी हित देशनारे वारी, धारत चित्त
धारत चित्त उल्लास । भव भय भीरू भव्यके रे,
भव भय भीरू भव्य क र वारी । छोडत है भव
छोडत है भव पास । चौमासी हित दशनारे । १ ।
समम गुणधारी सभीरे वारी, बहुसावद्य
बहुसावद्य व्यापार । करना ही नहीं चाहियेरे ।
करना ही नहीं चाहियेर वारी, जीव दया दील
जीव दया दील धार । चौमासी हित देशनारे । २ ।
फागुन आदिक मास में र वारी तिल धान्यादिक-
तिल धान्यादिक सार । संग्रहना नहा चाहिये रे ।
संग्रहना नहीं चाहिय रे वारी । जीवोत्पत्ति
जीवोत्पत्ति विचार । चौमासी हित देशनारे । ३ ।
अभक्ष्य बावीसों तथा र वारी । अनन्त काय
अनन्त काय बत्तीस । खाना कभी नहीं चाहियेरे ।
खाना कभी नहीं चाहियेरे वारी । मानो विसवा
मानो विसवा बीस । चौमासी हित देशनारे । ४ ।

अन जाने फल को सदा रे वारी । पत्र शाक विन
पत्र शाक विन शोध । विगड़े आटा घी विप रे ।
विगड़े आटा घी विपरे वारी । माँस दोप अवि
माँस दाप अविरोध । चौमासी हित देशनारे । ५ ।
इच्छारोधन भावसे रे वारी बहुविध तप वि
बहुविध तप विस्तार । भवदवताप निवारणोरे,
भवदवताप निवारणोरे वारी । शक्ति सहित चित्त
शक्ति सहित चितधार । चौमासी हित देशनारे ।६।।
श्रीहरि पूज्य कृपा थकीरे वारी समकित निर्मल
समकित निर्मल सार । दिव्य कवीन्द्र लह थहीरे ।
दिव्य कवीन्द्र लहे थहीरे वारी । अक्षय सुख भ
अक्षय सुख भण्डार । चौमासी हित देशनारे । ७ ।

सामायिक गहूली । ३३ ।

। अय दिल प्रभु की याद में गाफिल ना हो जरा । इस तर्ज में ।

सामायिक धारी श्रावक साधु तुल्य हो रहें । टेर ।
हैं निन्दक वन्दक एक से और मान तथा अपमान ।
त्रस थावर प्राणी मात्रमें समभाव जो रहें । सामायिक० ।१।

ससार जहेरी हसक अ कृर जा दा ई ।
उन राग द्वेषका छाड़के ज्ञानादिक लाभ नह । सामायिक०।२।
सामायिक समयिक आदि है सामायिक आठ प्रकार ।
उनका धारें व जीव अरन दु ख का दहें । सामायिक० ।३।
भाव अहिंसक सत्यवाणी पाप रहित आचार ।
पाइ अक्षरमें कर्म नाशक बारे का वहें सामायिक० ४ ।
ग्रान पदों में व्याप्त एसी द्वादशांगी है ।
सुनकर अनुशीलन सवथा अजरामर भाव गह । सामायिक०।५।
जो वस्तु मात्र का जानके, हयोंका त्याग कर ।
सुना साधन में परीषहा को सम से सहें । सामायिक०।६।
हरि पूज्य प्रभु आदश से सामायिक नित्य करें ।
वस दिव्य कवीन्द्र यशोगाथा उनकीहा सत्य कह । सामायिक०।७।

। चौमासी व्याख्यान गहूली । ३४ ।

। राग आशावरी सिद्ध चक्र पद वन्दो ।

चौमासी चित धार रे भविका, धर्म विशष विचार । टर ।

षट आवश्यक औषध अनुपम, उभय काल लो धार।
जिनवर वर धन्वन्तरी भाषित भव गद टालन हार।रे भवि०१
अपुनर् बंधकयोगसे कीना आवश्यक विस्तार।
बहुल पाप रजको हरता है द सुख अपरम्पार। रे भवि०।२।
तज आहार शरीर की सेवा गृह व्यापार कुशील।
पर्वदिवस में पौषध करके, मोह भूप दो खील। रे भवि०।३।
द्रव्य भाव शुचि मति दिन करना, जिन पद पूजा सार।
आतम पूज्यपणो तब प्रकटे, पूजक का निर्धार। रे भवि०।४।
इन्द्रिय मनका संयम करके, तज दो विषय विकार।
ब्रह्मचर्य आदर्श यही है अक्षय गुण आधार। रे भवि०।५।
अभयदान सुपात्र तथैव च, मुक्ति विधायक मूल।
अनुकम्पादिक दान जगतमें नरसुर सुख अनुकूल। रे भवि०।६।
इच्छारोधन तप को धारो, बाह्य अभ्यन्तर भाव।
कर्म निकाचितभी जरी जावे,लब्धि सिद्धि गुण दाव। रे भवि०७
निन्दा दुर्गति की महतारी कर निज दिल से दूर।
निज दुष्कृत की निन्दा करना, प्रकटे आतम नूर। रे भवि०।८
श्रीहरि पूज्य जिनेश्वर शासन, दुर्लभ पाया आज।
वैदिव्य कवीन्द्र सुकीर्तितसेवो, पावो अविचल राज। रे भवि।९

चौमासी व्याख्यान गहूली । ३५ ।

। राग गुजराती रामडा पद्धति ।

ाना भाव धरीने अइयें आवू भगवान० इस मर्ज में ।
ाखियाँ भाव सद् गुरु वाद हृदय में धारनार ।
ाया अनुपम अवसर चौमास का आज ।
व धर्म विरुप प्रकारे सविक समाज ।
रनी अपनी करत क्रम दुष्कृत आलोचनारे । टर ।
साखी) श्रावक का समारमें, लगते हैं अतिचार ।
आचारों का सेवत, शत चौवीस प्रकार ।
मिथ्या दुष्कृत्य उनका देत याग सुधारनारे । सखि० १।
साखी) समकित पूर्वक हैं कह श्रावक के व्रत बार ।
अप्रमाद परिणाम से, तज करके अतिचार ।
ाराधन से क्रम से सुर शिव सुख विस्तारनार । सखि० २ ॥
साखी) आतम गुण शोधक सदा, पुष्ट निमित्त प्रमान ।
शुद्ध देव गुरु धर्म की सेवा करो सुजान ।
वा सेवा दर्शी हैं अनुपम स्वीकारनारे । सखि० ३ ।
साखी) वीतराग के मार्ग में, नहीं राग अरु द्वेष ।

शात उपशम भाव में, वर्तन करो हमेश ॥
है यह पावन जैन धरम का मम विचारनारे । सखि० ४।
(साखी) श्रीहरिपूज्य जिनेश के सुन आदेश विधान ।
विधिपूर्वक पालन करो पावो पद कल्यान ।
यातें दिव्य कवीन्द्र करें कीरति निर्धारना रे । सखि० ५।



अष्टाहिका व्याख्यान गहूली । ३७ ।

। हो जिनराज म्हारी नैया पार लगाओ महाराज इस राग में ।

है धन भाग सेवा पर्व पजूसन आये सुखकार । टेर ।

(साखी) अष्ट करम वारक सही, परम धरम गुणधाम ।
अक्षय सुख दातार है भव्य जीव विसराम ॥
हो सुर राज जाय द्वीप नदीश्वर भक्ति चित्तधार । है धन०१।
(साखी) शाश्वत जिन मन्दिर वहाँ बावनगिरि पर सार ।
मणि मंदिर जिन बिंब है शत चउवीस उदार ।
हो, आठ दिवस करते उत्सव जिन पूजा हितकार । हैधन०२।
(साखी) ऐसे ही इस पर्व में, श्रावक तज परमाद ।
वत्सर पर्वके आठ दिन, धर्म करो आबाद ॥

ो गुरुराज करते धर्मबोध सुन पाम्यो निजाचार । हैग्न०।३।
(साखी) सामायिक जिन पूजना, करते तपो विधान ।
आश्रव और कषाय का, रोको दुश्मन मान ।
ो निग देना दान अभय बहुभय मय जीवों को अपार ।है५०४।
(साखी) श्रीहरिसागर सद्गुरु, दें दृष्टान्त रसाल ।
उपदेशों करते रहा, वरते मङ्गल वार ॥
ो निर्भय बोले दिव्य कवीन्द्र, जयकार । है धन० ।५।

अष्टाहिका व्याख्यान गहूली । ३७ ।

हुए आया मारासाये मतका पतो मन को तनको लगन को जा।
। कुण आयो मारामाके मन को इस राग मे ।

खी पर्व पजूसन सेवो, एतो सेव्यॉ पावन मेशार ।मवी०२८।
ाश्रव कारण मब त्यागो घन मोह निंद से जागोरे । सखी०
ह मिष्ट वचन वा धनदे, आरम्भ तजाओ मनहेर ।सखी०।१।
नों से वदि छुड़ाना, जीवा को अमारि पलाना । सखी०।

मत भेदि छेति कहा वाणी, कहो वाणी हितगुणखाणीरे ।स
परधन पत्थर सम माना विषरूप विषय सब जानारे । सखी
तृष्णा अति दूर निवारो संताप सदा चित धारोरे । सखी० ३
प्रीति का राग हटारे, सुविनय को मान घटारेरे । सखी०।
मैत्री का माया मारे, सब गुण का लोभ सहारे । सखी०।४
समता मयम सुख धारा, दुर्ध्यान हृदय से टारा रे । सखी०
लख खंडी कनक निसरनी, ना इक सामायिक सानीरे ।सखी०
आतमगुण पुष्टि बिगायि, करो पौषध पुण्य कमाई रे ।सखी०
पौषध सामर्थ्य विहीना, द्रव्य पूजा करो मनोरथार । सखी०।६
त्रिक शुद्धि तीन अवस्था जाना पूजा की व्यवस्थारे । सखी०
जिन दर्शन दुरित विनाश, वन्दन मनवांछित वासेर ।सखी०७
जिन पूजन औसर पूरे, जिन सुरतरु चिन्ता चूरेरे । सखी०।
जिन पडिमाजिनसमजाणो उपकार विशप प्रमाणोरे ।सखी०८।
जिन पडिमा दर्शन सारा, बोधल है आर्द्र कुमारारे ।सखी०।
पडिमा-श्रुत पचम आरे, भविजन के काज सुधारेरे । सखी०९।
सुखसागर श्रीभगवाना, गणनायक गुरु गुणवानारे । सखी०
हरिपूज्य नमो हितकारी, कीरति सुकवीन्द्र उचारीर ।सखी०१०

अष्टाह्निका व्याख्यान गहूली । ३८ ।

नर देव तू निश्च जाइ जगमे नहीं तेरा कोई इस गग में ।

भवि पुण्योदय फल पावे, महापर्व पजूसन ध्यावे । टेर ।
बल धर्म विषय विस्तारो, परमाद हृदयसे टारो ।
समकित सुव्रत गुण धारो, भव भवके दु ख शमावे। भवि०१।
इन देश अनारजवासी श्रीआर्द्रकुमार विलासी ।
सयम हित शक्ति विकासी, जिनप्रतिमाके परभावे।भवि०।२।
भोगावलि कर्म खपावे, सयम में चित्त लगावे ।
रागादिक भाव गमावे, करुणारस रेल चलावे । भवि०।३।
निज अनुचरगण प्रतिबोधे, तापसहिंसा प्रतिशोधे ।
गोशालक मत प्रतिरोध प्रभु वीरशरण शिव जावे । भवि०।४।
जिनप्रतिमा दर्शन भावे, आतम गुण निर्मल दावे ।
परमातम भाव निपावे, निज आगम ग्रन्थ बतावे । भवि०।५।
प्राणान्त कष्ट आने पर भी तपो नियम अति दृढ़तर ।
खड़ो मही निश्चल होकर, घन घाति कर्म हटावे । भवि०।६।
ज्यों दैवी परीक्षा होती, त्यों बढ़ती है निज ज्योति ।
शिव रमणी सन्मुख होती, है जगमें कीरति छावे । भवि०।७।
श्रीसूर्ययशा भूपाला, निज नियम अखण्डित पाला ।
सुरगावे गुण मणि माला, दृष्टांत गुरु दिखलावे । भवि०।८।

मत भेदि छदि कहा वाणी, कहा वाणी हितगुणखाणीरे ।स०
परधन पत्थर सम मानो, विष रूप विषय सब जानोरे । सखी
तृष्णा अग्नि दूर निवारो सन्ताप सदा चित धारोरे । सखी०३
प्रीति को क्रोध हटावे, सुविनय को मान घटावेरे । सखी०।
मैत्री को माया मारे, सब गुण का लाभ सहारेरे । सखी०।४
समता संयम सुख धारा, दुर्ध्यान हृदय से टारा रे । सखी
लख खड़ी कनक नितदानी, ना इक सामायिक सानीरे ।सखी०
आतमगुण पुष्टि विधायि, करो पौषध पुण्य कमाई रे ।सखी०
पौषध सामर्थ्य विहीना, द्रव्य पूजा करो प्रवीणारे । सखी०।६।
त्रिक शुद्धि तीन अवस्था जाना पूजा की व्यवस्थारे । सखी०
जिन दर्शन दुरित विनाशे, चन्दन मनवांछित वासेरे।सखी०६।
जिन पूजन श्रीसब पूरे, जिन सुरतरु चिन्ता चूरेरे । सखी०।
जिन पडिमाजिनसमजाणा उपकार विशेष प्रमाणारे ।सखी०८।
जिन पडिमा दर्शन सारा, बोधत है आर्द्र कुमारारे ।सखी०।
पडिमा श्रुत पचम आरे, भविजन के काज सुधारेरे । सखी०९।
सुखसागर श्रीभगवाना, गणनायक गुरु गुणवानारे । सखी०
हरिपूज्य नमो हितकारी, कीरति सुकवीन्द्र उचारीरे ।सखी०१०

अष्टाहिका व्याख्यान गहूली । ३८ ।

मर दम तू निश्च जोइ अगम नहीं तेरा कोइ इस गग में ।

भवि पुण्यादय फल पावें, महापत्र पजूसन व्यार । टर ।
बल घम विषय विस्तारा, परमाद हृदयसे टारा ।
समकित सुरतरु गुण धारा, भव भवरु दु ख शमावे। भवि०१।
कुल देश धनारजवासी श्रीआर्द्र कुमार विलासी ।
सयम हित शक्ति विकासी, जिनमतिमाके परभावे ।भवि०।२।
मागावलि कर्म खपावे, सयम में चित्त लगावे ।
रागादिक भाव गमावे, करुणारस रस बनावे । भवि०।३।
निज अनुचरगण मतिबोध, तापसहिंसा मतिशोधे ।
गाशालक मत मतिरोधे मभु वीरशरण शिव जावे । भवि०।४।
जिनमतिमा दर्शन भावे, आतम गुण निर्मल ठावे ।
परमातम भाव निपावे, निज आगम ग्रन्थ बतावे । भवि०।५।
माणान्त कष्ट आने पर भी तपा नियम अति दृढ़तर ।
धार्मे नहीं निश्चल होकर, घन घाति कर्म हठावे । भवि०।६।
ज्यों दैवी परीक्षा होती, त्यों बढती है निज ज्योति ।
शिव रमणी सम्मुख होती, है जगमें कीरति छावे । भवि०।७।
श्रीसूर्ययशा भूपाला, निज नियम अखंडित पाला ।
सुरगावे गुण मणि माला, दृष्टांतगुरु दिखलावे । भवि०।८।

श्रीहरिसागर गुरराया, उपदेशे बोध सवाया।
है दिव्य कवीन्द्र न गाया, धार अतिचार मिटावे। भवि०।

दीवाली व्याख्यान प्रारंभ गहूंली। ३९

पशरिया थास् प्रति लगीरे माचा आयस् इस राग मे

धन आज सुनेंगे पर्व दीवाली अधिकार को। टेर।
उज्जयिनीपति सम्प्रति पूछे, आर्य सुहस्ती स्वामी।
स्वामी जाने आप मुझे क्या, गुरु कहें तू नामीरे। धन०१।
विशेष पूछे श्रुत उपयोगे, कहें गुरु सब जाना।
मादक हित मुनिवेश धार मर, हुआ तू नृप गुणवानारे धन०।२।
वदन कर सम्प्रति तब बोले, गुरु प्रताप है भारी।
मुझ गरीब को राज दिया यह, जाउ तुम बलिहारी रे। धन०।३।
राज को लीजे उऋण कीजे राजा विनति उचारे।
तन मूर्छा भी नाहि क्या न, गुरुयो कह कर वारेरे। धन०।४।
पुण्य मिली सम्पत्ति है यह, ताते पुण्य बढावो।
धर्म करो नित पर्वदिनों मे, आतमशक्ति जगावोरे। धन०५।
सम्प्रति पूछे लौकिक लोको, वर पर्व दिवाली।
मनरा करसे ० [illegible] मारालीरे धन०६।

[ा वाणी गुरु उपदेशें वीर चरित विस्तारी।
वन गर्भहरण जन्मादिक, छह कल्याणक भारीरे। धन०।७।
ा गमन कल्याणक समय, प्रकटा पर्व दीवाली।
री का अधिकार सुनो अरु, अवधारो इकतारी रे। धन०।८।
री पूज्य गुरु गण नायक, चरण शरण चित धारी।
जिन पाव अनुपम कीरति, दिव्य कवीन्द्र उचारीरे। धन०।९।

दीवाली व्याख्यान पुण्यपाल स्वप्नफल गहूली। ४०।

मेलदे उतारा राजा भरथरी इस राग में।

। समय निज जान के कर्म खपावन हेतु।
। महर देवें देशना वीर विभु जग केतु।
वीर वचन हित कर नमो। टेर।
पाल राना वहाँ वन्दन विधि निरधार।
भयङ्कर स्वप्न का, भावि फल पूछे सार। वीर० १।
जीरणशाल में, गज रहते आसक्त।
सुन्दरशाला थकी, रहते पूर्ण विरक्त। वीर० २।
र आरे मानिया, गृहस्था श्रमधारी।
मिय उसमें रत रहें, दीक्षा ल न अवारी। वीर० ३।

बन्दर देखा चपलता, करता हुआ अपार ।
होंगे ज्ञानादर बिना, साधु शिथिलाचार । वीर० ४।
क्षीर वृक्ष कण्टक घिरा देखा स्वप्न मझार ।
शुभरागी श्रावक घिरे कण्टक मिथ्या विचार । वीर० ५।
काग कुचेष्टा कर रहा उसका फल मुनि मानी ।
शुद्ध स्वगण तज कुगणमें जाय न हित जानी । वीर० ६।
सिंह मरा पर भय करे ऐसे जिनमत होगा ।
कमल उकरडी पर उगा धर्म नीच कुल योगा । वीर०७।
बीज बोये ऊपर खेत में, देंगे कुपात्र में दान ।
कनक कलश मलसे भरा, सुनत पूजा न मान । वीर०८।
हरि पूज्य प्रभु से सुना, दुखमय भावी काल ।
पंचमहाव्रत धारी हो, शिव जावें पुण्यपाल । वीर०९।
धन्य दिवस धन्य वे घडी, पाखिल प्रभु उपदेश ।
दिव्य कवीन्द्र सुनकर भवी त्यागें राग रु द्वेष । वीर १०।



दीवाली व्याख्यान चन्द्रगुप्त स्वप्नफल गहूली। २१।

। सलूणा की तर्ज ।

प्रणमधान श्रुतकेवलीरे भद्रबाहू गण धार सलूणा।
पाटलीपुर समोसरेरे, वट्ट साधु परिवार सलूणा। १।
चन्द्रगुप्त राजा वहाँ रे, श्रावक धर्म सुजाण सलूणा।
श्रेणिक नृप सम श्रीगुरुरे, वन्देकर बहुमान सलूणा। २।
देख चतुर्दश स्वप्न येरे, पौषध पिछलीरात सलूणा।
उनके फल पूछे कहें रे, गुरु निर्मल अवदात सलूणा। ३।
सुर तरु शाखा टूटतेरे दीक्षा नहीं ले भूप सलूणा।
सूर्य अकालमें आथमारे, केवल ज्ञान विलूप सलूणा। ४।
चन्द्रलखा शत छिद्रसेरे, धर्म में पथ अनेक सलूणा।
भूतों को देखा नाचतेरे, कुमति उच्छृङ्खल छेक सलूणा। ५।
काला साँप बारह फणारे, बारह वर्ष दुकाल सलूणा।
देव विमान आकर गिरारे नहीं जघादिक चाल सलूणा। ६।
कचरीली भूमि पद्मसेरे, धर्म वणिक कुल धार सलूणा।
खजुआ चमका विश्वमेंरे, मिथ्यामत सतकार सलूणा। ७।
सूखा सरसे धर्म की रे कल्याणक थल हाण सलूणा।
कनक थाल कुत्ता मखेरे लक्ष्मी नीच मयान सलूणा। ८।

बन्दर हाथींपे चढारे, दुर्जन निरय विशोक । सलूणा ।
सागर मर्यादा तजेरे नीति राजा लोक । सलूणा । ९ ।
जगी रथ वछड़े जुते रे सयम लेवें बाल सलूणा ।
ज्योति हीन सुरत्नसेरे साधु करें कुचाल । सलूणा । १० ।
नृप बालक वेलों चढारे क्षत्रिय कुमत मुलीन । सलूणा ।
गज बालक लड़ते लखेरे, त्यों मुनि प्रेम विहीन । सलूणा ।११
गुरु ध्रुव से यों जानवेरे, भावि भयङ्कर रूप । सलूणा ।
अनशनकर स्वर्ग गयारे, चन्द्रगुप्त सुभूप । सलूणा । १२ ।
श्रीहरि पूज्य जिनश के रे, शासन का विस्तार । सलूणा ।
उदय समय होगा सहीरे, दिव्य कवीन्द्र विचार । सलूणा ।१

दीवाली व्याख्यान भावीकाल स्वरूप गहू ली ।४७।

। गुजराती रासड़ा पद्धति ।

दुखमय पंचम काल कराल सरूप विचारकारे ।
पूछे प्रश्न प्रभुसे सविनय गौतम स्वाम ।
भाष अविसंवादी वीर प्रभु गुणधाम ।
सुनकर पालन करना सुख कर धर्माचारकारे । टर ।

(साखी) तीन वर्ष महिने अधिक, उपर साढा आठ ।
मम निर्वाणान्तरे, होगा पंचम ठाठ ।
वह भी होगा निश्चय वरष इकीस हजार कारे । दु० १ ।
(साखी) होंगे पंचम कालमें, मानव दुर्विध दीन ।
भूमि रस कससे रहित, धन संपत्ति हीन ।
होगा नाश सही सब सार वस्तु विस्तार कारे । दु० २ ।
(साखी) उदय समय के योगसे, युगपरधान महान ।
जनमेंगे उनसे यहाँ होंगे पुण्य विधान ।
उड़ेगा फिर झंडा जैन धरम परचार का रे । दु० ३ ।
(साखी) अन्ते होगा सर्वथा, जैन धर्म विच्छेद ।
छट्टा आरा भी लगे, दुखम दुखम बहुखेद ।
उसका होगा यह परिमाण, जो पंचम आर कारे । दु०४।
(साखी) फिर होगी उत्सर्पिणी, छह आरों की एक ।
उत्तरोत्तर होंगे सही, उत्तम भाव अनेक ।
वैसे चलता है यह काल चक्र संसार कार । दु० ५।
(साखी) प्रवचन काल सरूपका, यों करके प्रभु वीर ।
दव शर्म के बोध हित, गौतम का गुणधीर ।
भावीवश आदेश करें अन्यत्र विहारकारे । दु० ६ ।
(साखी) इन्द्रासन कम्पा तभी मुक्ति समय का जान ।

थाकर वदे इन्द्र भी, भावें श्रीभगवान ॥
गद गद कंठे बोले दुखसे वचन विचारकारे । दु० ७ ।
(साखी) भस्मकग्रह से योग है, हस्तोत्तर का आज ।
यदि आयुप की वृद्धिकर, निष्फल करदो ताज ।
भाषे वीर विषय यह जाना नांहि अधिकार कारे । दु०८
(साखी) भस्मकग्रह जब ऊतरे, उदय धर्म का जान ।
होगा भारतवर्ष में, धीरज हरि मन ठान ।
गावेगा तब गीत कवीन्द्र सुमंगला चार कारे । दु० ९ ।

दीवाली व्याख्यान गौतम विलाप गहूली ।४३

पंथीड़ा सन्देशो केजे मारा श्रीरने इस तर्ज में ।

वीतराग जिन पारगत प्रभु वीर जी,
पावापुरमें मुक्ति सिधाये नाथ जो ।
अपुनर्भव अजरामर पदवी का लह,
हुआ भरतमें चउविध संघ अनाथ जो ।१।
कल्याणक उत्सव हित आते देवके,
कोलाहल सुन जाना जिन निर्वाणजो ।
वज्राहत मूर्छित गौतम स्वामी हुए,

करते शाक विलाप अनेक विधान जो ।२।
अन्त समय क्यों छोड़ चले हे नाथजी,
जानकार हो छोड़ा जग व्यवहार जो ।
गौतम गौतम कौन कहेगा अब मुझे
कौन हरेगा संशय मम दुर्वार जो ।३।
किससे जाकर अब मैं पूछूंगा सभा ।
छाया आज यहाँ पर घोर अंधार जो ।
अन्त समयमें दूर किया क्या जानके
जाना क्या माँगेगा केवल सार जो ? ।४।
अथवा माना होगा पीछे बाल ज्यों
आवेगा यह गौतम मेरे साथ जो ।
अशरणशरण विरुद् धारक स्वामीकहो
क्या सूझी जो दूर किया हे नाथ जो ।५।
इते तो क्या खोट लगी थी आपके
आता तो क्या भिन्न हो जाता संग जो ।
प्रबल विरह दावानल तनमनमें लगा
जला रहा है काम हुआ बदरंग जो ।६।
हा हा ! भूला वीतराग जे वीर थ
रागी होकर भूला मैं निज मान जो ।
मेरा तेरा मोह मंत्र संसार में,

अंध बना देता है दुख अमान जो ।७।
मेरा तेरा भाव जगत जंजाल को
छोड चढे गुण ठाणे गौतम सामनो ।
घाती कर्म हठाकर केवल ज्ञानसे
देखे परतिख लोकालोक तमाम जो ।८।
दीवाली दिन वीर प्रभु निर्वाण थी,
गौतम स्वामी पाये केवल ज्ञान जो ।
चउविध संघ तल्लीन हुआ सुखसिंधुमें
हरि कवीन्द्र जय बोलें एकीतान जो ।९।

ज्ञान पंचमी व्याख्यान गहूली । ४४ ।

। राग—धनाश्रिरि ।

ज्ञान सभी में सार, सुनोरी सखी ? ज्ञान सभी में सार ।टेर।
ज्ञानाराधन दिन सुखसाधन पंचमी तिथि अवधार । सुनो०
पठन-पाठन श्रवण मननों, करना ज्ञान प्रचार । सुनो०१।
ज्ञान महागुण प्रकट पावें, मन वाँछित विस्तार । सुनो०।
मन वच काया ज्ञान विराधक, पावें दुख अपार । सुनो०२।
मन से शून्य बन नहीं पावे, वस्तु विवेक लगार । सुनो०।

मुखमें रोगी मूंगा होवे, काया कोढ विकार । सुना०७।
करें करावें ज्ञान विराधना, मूरख जो नर नार । सुना०।
पुत्र कलत्र कुटुम्ब सह नाशे, परभव धन भंडार । सुना०।४।
आधि व्याधि और उपाधि, होवे अनक प्रकार । सुनो०।
यातें ज्ञान विराधन वृत्ति, दना दूर निवार । सुनो०।५।
ज्ञानी ज्ञानाराधक जनकी, भक्ति करो निर्धार । सुनो०
ज्ञानावरणी कर्म विनाशे, रहे नहीं अंधकार । सुना ।६।
गुण मंजरी-वरदत्त चरित्र को, लेना खूब विचार । सुनो०।
विराधक-आराधक भावे दुखिये सुखिये धार । सुनो०७।
श्रीहरि पूज्य कथित विधियासे ज्ञानाराधनकार । सुना० ।
शिष्य कवीन्द्र सुकीर्तित होकर, पावें भवजल पार । सुना०८।

कार्तिक पूर्णिमा व्याख्यान गहूली । ४५ ।

चन्दा प्रभु जी से ध्यानरे मोरी लागा० इस तर्ज में ।

कार्तिक पूनम दिन जयकारी, महिमा अपरपाररे ।
सखी चित्त अवधारा चित्त अवधारा, कारज सारो
सेवा विमल गिरि साररे । सखी चित्त अवधारा ।टेर।
आदिनाथ प्रभु पोतररे, द्राविड वारिखीस्लरे । सखी० ।
दश कोडि मुनि सगमेरे शोषे कर्म खिखिल्लरे । सखी०।१।

अधवना दता है दुःख अमान जो ।७।
मेरा तेरा भाव जगत जंजाल को
छोड चढे गुण ठाणे गौतम सामनो।
घाती कर्म हठाकर केवल ज्ञानसे
देख परखिल लोकालोक तमाम जो ।८।
दीवाली दिन वीर प्रभु निर्वाण श्री,
गौतम स्वामी पाये केवल ज्ञान जो।
चतविध संघमुल्तीन हुआ सुखसिंधुमें,
हरि कवीन्द्र जय बोलें एकीतान जो ।९।

ज्ञान पंचमी व्याख्यान गहूंली । ४४ ।

। राग—धनाश्रिरि ।

ज्ञान सभी में सार, सुनोरी सखी ? ज्ञान सभी में सार ।टेर।
ज्ञानाराधन शिव सुखसाधन पंचमी तिथि अवधार । सुनो०।
पठन-पाठन श्रवण मननसे, करना ज्ञान प्रचार । सुनो०१।
ज्ञान महागुण प्रकट पावे, मन वांछित विस्तार । सुनो०।
मन वच काया ज्ञान विराधक, पावें दुःख अपार । सुनो०२।
मन से शून्य बने नहीं पावे, वस्तु विवेक लगार । सुनो०।

ृतवमें रोगी मूंगा होवे, काया कोढ विकार। सुनो०३।
रे करावें ज्ञान विराधना, मूरख जो नर नार। सुनो०।
ुत्र कलत्र कुटुम्ब सह नाशे, परभव धन भहार। सुनो०।४।
ाधि व्याधि और उपाधि, होत अनेक प्रकार। सुनो०।
ाते ज्ञान विराधन वृत्ति, देना दूर निवार। सुनो०।५।
ाना ज्ञानाराधक जनकी, भक्ति करो निर्धार। सुनो०
ानावरणी कर्म विनाशे, रहे नहीं अंधकार। सुनो ।६।
ुण मंजरी-वरदत्त चरित्र को, लेना खूब विचार। सुनो०।
विराधक-आराधक भावे दुखिये सुखिये धार। सुनो०७।
ाहरि पूज्य कथित विधियासे ज्ञानाराधनकार। सुनो०।
िय कवीन्द्र सुकीर्तिम होकर, पावें भवजल पार। सुनो०८।

कार्तिक पूर्णिमा व्याख्यान गहूली ।४५।

चन्दा प्रभु जी से ध्यानरे मोरी लागा० इस तर्ज में।

कार्तिक पूनम दिन जयकारी, महिमा अपरपाररे।
सखी चित्त अवधारो चित्त अवधारो, कारज सारो
सेवा विमल गिरि साररे। सखी चित्त अवधारो।टेर।
आदिनाथ प्रभु पौतरे, द्राविड वारिखील्लरे। सखी०।
दश क्रोड मुनि संगमेरे, शोषें कर्म चिखिल्लरे। सखी०।१।

द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव ये पाकरके अनुकूलरे । सखी०
तीरथ रानी सेवा भावे वाला कर्म समूल रे । सखी०।३।
शक्ति अभावे तीरथ सन्मुख वन्दन भक्ति विशेषरे ।सखी०।
द्राविड वारिखिल्लक जैसे गाढा राग रु द्वेषरे । सखी०४।
सुनसधारी हो ब्रह्मचारी रथयात्रादि निधानरे । सखी० ।
समकित निर्मल कारणठानो निज निज शक्ति प्रमानरसखी०४
शत्रुंजय गिरि जो भवि भेटे, शत्रुंजय होजाय रे । सखी०।
नहिं तो गर्भावासी है वह श्रीजिन आगम गायरे ।सखी०५
अष्टोत्तरशत नाम विराजी निर्मलाचल गिरिराजरे। सखी
साधु कर्म खपाकर पाये, यहाँपर वर शिवराजरे । सखी०६।
कार्ती पूनम पर्व आराधो तीरथ भक्ति सुधाररे । सखी० ।
सदगुरु बोध सुधारस पीकर सफल करो अवतारर ।सखी०७।
श्रीहरिपूज्य प्रभु आदीश्वर जाप जपो तिहुं कालरे । सखी०।
दिव्य रवीन्द्र सुकीर्तिसदना नित्य विजय वरमालरे ।सखी०८



मौन एकादशी पर्व व्याख्यान गहूली ।१६।

सीता माता का गोदी म हनुमत डारी मू दडी ।

इस तर्ज मे ।

भवियाँ करके योग निरोध, विरोध मिटावनार । टर ।
सेवो मौन एकादशी पर्व चित में हाकर आप अगव ।
प्रकट आतम सिद्धि सब परम सुख पावनार । भवि० १।
पूछें सविनय कृष्ण नरश, वन्दन करके नमजिनेश ।
सबमें दिन है कौन विशेष जिसे आराधनार । भवि० २।
भाषे जिनवर जगदाधार मिगसिर सुदि एकादशी सार ।
जिसका महिमा का नहीं पार मुरारि धारनारे । भवि०३।
इस दिन अरजिन दीक्षा जान, मकरा नामिजिन केवलज्ञान ।
मल्लनी जनम-सुदीक्षा ज्ञान, कल्याणक भावनारे । भवि ४।
पाँच भरत ऐरवतमें मान, ऐसे पच कल्याणक ठाण ।
गिनते होत पचास ममाणा, नियम निर्धारनारे । भवि०५।
कालत्रय से गिनते खास, होवे सौ ऊपर पच्चास।
लखते काल अनन्त विलास,अनन्त ज गावनारे । भवि०।६।
यह दिन कल्याणक मण्डाण, आराधो पावो भव पार ।
"सुव्रत श्रेष्ठ"चरित्र सुनसार, करो पर भावनारे । भवि०

चाणी सयम मौन मुधार, उपवासी होकर निर्धार ।
जिनगुण माला अट्ठीकार, करमकट जावनारे । भवि-।८।
यों मुन नेमीश्वर उपदश आराधें श्रीकृष्ण नरेश ।
आगे होंग जो तीथेश, तथा तुम ध्यावनारे । भवि०।९।
श्रीहरिपूज्य परम गुरु बोध, सुनकर करना वचन निरोध ।
दिव्य कवीन्द्र मुकीरति धोध, करें विस्तारनारे । भवि०१०।

पौषदशमी पर्व व्याख्यान गहूली ।४७।

राग वनझारा—अगमे नहां तरा कोई नर देख तू०
इस तर्ज मे ।

नमो वीर जिनश्वर राया, जिनने सत धर्म बताया । टेर ।
प्रभु चम्पापुर में आवे, सुर समवसरण विरचावें ।
तब बारह परीषद आवे, प्रभु बोध सुनें सुखदाया । नमो०१।
चतुरङ्गी सेना सगे उत्सवपूर्वक बहु रङ्ग ।
कोणिक नृप भक्ति उमगे, जिन चरणे सीस नमाया । नमो०२
जग जीव दया दिल धारो, विषयों से इन्द्रिय वारो ।
शुभ सत्य सदैव उचारो, यों धर्म रहस्य सुनाया । नमो०३।
पछे तब गौतम स्वामी चउनाणी जग हितकामी ।
वदी पौष दशमका नामी, माहात्म्य कहो जिनराया । नमो०४।

त्नि पार्श्व जनम दिन जानो,कल्याणकमय परमानो ।
वर धर्म क्रिया सब ठानो, यों वीर प्रभु फरमाया । नमो०५।
आराधन कर शिव जावे , सूरदत्त यथा अग गावे ।
आराधो त्यों भवि भाव , जो सुख चाहो मनभाया ।नमो०६।
इम पौष दशम आराधे, हरिपूज्य परम पद साधे ।
मणिगुण सिंधु अगाधे सुरइन्द्र भी पार न पाया । नमो०७।



मेरु त्रयोदशी व्याख्यान गहूली । ४८ ।

। विमला चल वासा म्हारा व्हाला सेवक ने विसारो नहीं-
रे विसारो नहीं । इस तर्ज मे।

मुखदायक श्री जिन वाणी सुजन चित्त धारो महीरे
विसारो नहीं । टेर ।
गौतम गणधर आदिक परिषद् का उपन्या वीर ।
मेरु तेरसको आराधो महिमा गम्भीर ।
सुजन चित्त धारो मही रे विसारो नहीं । १ ।
माघवदी तेरस दिन उत्तम, आदीश्वर अरिहन्त ।
भवधारी सब कम विनाशी होगये शिव वधू कन्त ।
सुजन चित्त धारो मही रे विसारो नहीं० । २ ।

तातें उस दिन का आराधन विधि पूर्वक ला धार।
दुर्गति हेतु जान हृदय से पच प्रमाद निवार।
सुजन चित्त धारो सहिर विसारो नहीं० । ३ ।
चौ विहार उपवास करो मधि आदीश्वर का ध्यान।
रतन कनक रूपे या घीके मेरु चढ़ाओ महान ।
सुजन चित्त धारो सही रे विसारो नहीं । ४ ।
समकित सुव्रत शील परम गुण गण रत्नों की माल।
उद्यम पूर्वक ममे पहनो दूर टले जजाल ।
सुजन चित्त धारो सहीरे विसारो नहीं० । ५ ।
विकट कोटि सकट कट जाव निविड करम हों नाश ।
'पींगल राय' चरित्र अवधारो तोड़ा माहनी पाश ।
सुजनचित्त धारो सहीरे विसारो नहीं० । ६ ।
सुख सागर भगवान परम गुरु श्री हरि पूज्य जिनेश ।
आज्ञा रंगी जीवन जनके गुण गावें कवीन्द्र हमेश ।
सुजन चित्त धारो सही रे विसारो नहीं० । ७ ।





होलो निषेधोपदेश गहूली । १८ ।

। जय बोलो रे पार्श्व जिनेशर की परमेशर का जय बोलो ।
इस तर्ज में राग होली ।

मत खेलो रे होली विचार करो मत खेलो । टेर ।
कुल-जाति लज्जा मर्यादा, होली में स्वाहा न करो । मत० ।
गाली गाना नीच जनों का है लक्षण यह क्यों विसरो ।मत०१।
मैला-मूत्र जलादिक छांटो, भंगी से क्यों भेद धरो । मत० ।
माता बहिन बेटियाँ बैठी उनका तो कुछ ख्याल करो ।मत०२।
निज सतति को दुष्कर्मों की, शिक्षा देते क्यों न डरो । मत० ।
गधोंपर चढ़ते भी शोचो, किस कुलका व्यवहार करो ।मत०३।
पत्थर भङ्ग कहा क्यों अपनी, मर्यादाका भंग करो । मत० ।
रंग उड़ाकर निज का ही क्यों, रंग जगत से लोप करो ।मत०४।
बनकर आर्य अनार्य सरीखे, कामों को कर क्यों बिगरो । मत०।
होली के दुष्कर्मों के भी, प्रायश्चित्त सुनो सुगरो । मत० ५ ।
पाप सरूपी है द्रव्य होली, कर क्यों दुर्गति जाय परो ।मत०।
होली खेलन को जो चाहो, तो कर्मों की होली करो ।मत०६।
कर्मों की होली जो होली, कभी न जनमो नाहीं मरो ।मत०।
सुख सागर भगवान जगतमें, श्रीहरि पूज्य हुण विचरो । मत०७।
होली का व्याख्यान सुनो फिर,मनमें चिंतन खूब करो ।मत०।
दिव्य कवीन्द्रोंसे फिर अपनी, यश कीरति विस्तार करो ।मत०८।

चैत्री पूर्णिमा व्याख्यान गहूंली । ५० ।

आवा नवाणु करिये विमलगिरि० इस तर्ज में ।

चैत्री पुनम चित्त धारो रे भविका, चैत्री पुनम चित्तधारो।
गुरु उपदेश विचारो रे भविका, चैत्री पुनम चित्त धारो। टेर।
चैत्री पुनम दिन आदीश्वर के गणधर पुण्डरीक स्वामी।
पाँच कोडि मुनिसंग विमलगिरि, होगये शिवगति गामीरे।भवि१।
पुण्डरीकगिरि नाम प्रसिद्धो, पाप गमे पुण्डरीक।
होकर के उपवासी सेवो, चैत्री पुनम दिन ठीक रे।भवि० २।
पुण्डरीक गणधर गिरि ध्यावो, आदीश्वर अरिहन्त।
द्रव्य भाव पूजा-देव वन्दन, करो करमदल अन्त रे।भवि० ३।
सिद्धाचल यदि जा नहीं सकते, निजपुर नगर विशेष।
गिरि सम्मुख पट थापन करके पर्व आराधो अशेष रे।भवि०४।
रोग शोक-दौर्भाग्य वियोगा, भूत प्रेत दूर जावे।
पर्वाराधन करते भविजन, चउगति छेदक थावे रे। भवि० ५।
दुर्भागी कन्या के चरित से, श्री गुरुवर समजावे।
श्रुद्धानन्दन योगे भाणी अजरामर पद पावे रे। भवि० ६।
सुख सागर भगवान परमगुरु, श्रीहरि पूज्य प्रभावो।
शिवपुर द्वारको खोले ऐसी, देत कवीन्द्र सुचावी रे। भवि० ७।

अक्षयतृतीया व्याख्यान गहूँली । ५१ ।

केशरिया थासु प्रीत लगी रे सच्चा भाव सू । इस तर्ने में ।

त भूलो भवियाँ ! कुटिल गति है आठों कर्म की ।
र नाश उन्हीं का, सिद्धि लहो रे आतम धर्म की । टेर ।

पुर महर तक पूरव भव में, आदीश्वर जिन जीव ।
ढंकी बैलोंके मुख वाँगी, दी अन्तराय अतीवरे । मत० १।

आदीश्वर भव दीक्षानतर, कर्मोदय फल भावे ।
बारमासतक शुद्ध गोचरी, अशनमात्र नहीं पावेरे । मत० २।

विचरत प्रभु हथणापुर आये, वह श्रेयाँस कुमारा ।
निशिमें स्वप्न लखे दिनमें फिर, प्रभु मुनिवेश विचारा रे ।मत० ३।

ताल समरण प्रकटा जाना, गोचरी विधि विस्तारा ।
मणि-कंचन-कन्याके दानो लख लोकोंको वारा रे । मत० ४।

ब लोकों को समझा कर के ईसु रस विहराव रे ।
त्र दानविधि फिर प्रकटाव, पचदिव्य सुर लावेरे ।मत० ५।

र्द्धमान श्रेयास भाव अरु पात्र जिनेश्वर जानो ।
द्ध मान ईक्षुरस योगे, अक्षय भाव वखानो रे । मत० ६।

क्षय तीज हुई उस दिन से, अक्षय पद गुण धारी ।
र्मविनाश हुआ तब जिनको प्रकटा गुण अविकारीरे ।मत०७।

कर्मेन्द्रिय का योद्धा प्रभु न, धीरवीर हो कर के।
वैसे ही सब कर्म विनाशा निज प्रमादको तजके रे। प्रत०१

श्रीहरि पूज्य परम गुरु शासन, वासित चित्त बनाओ।
दिव्य कवीन्द्रोंसे फिर अपनी कीरति खूब गवाओरे। प्रत०६

श्री कल्पसूत्र महिमा गहूंली ।५२।

तज जिल्ला की।

कल्पसूत्र वर कल्प तरु आराधी रे शिव साधो नर नार
मन वांछित फल पावो दुःख मिटावो रे, सुजाण। १

आतम भूमि शुद्ध करो भवि प्राणीरे, गुरुवाणी सुन सार
कल्प सूत्र वर कल्प बीजको बोवो रे, सुजाण। २

पुण्य अंकूर सनूर सफलता लावेरे, बहुदावे हितकार।
दूर प्रमाद-विषाद विवाद मिटावो रे, सुजाण ॥ ३ ॥

काल लब्धि अनुकूल हरे भवशूल रे, करे दूर विकार।
गत दूषण पर्यूषण भावे ध्यावो रे, सुजाण ॥ ४ ॥

पूजा-परभावन उत्सव विधि भारी रे, जयकारी मनुहार।
सुव्रत-संयम रत हो पाप नशावो रे, सुजाण ॥ ५ ॥

निज दर्शन-गुरु वन्दन पाप निकन्दे रे, आनन्द विहार।
निज दर्शन गुण निर्मल सूत्र बनावो रे सुजाण ॥ ६ ॥
धारि पूज्य परमगुरु बोध सुनावें रे, समभावे विचार।
...य कवीन्द्र महोदय झटपट पावो रे, सुजाण ॥ ७ ॥

श्री कल्प सूत्र प्रथम व्याख्यान गहूली । ५३ ।

...र्न-सखियाँ गावो रे काइ गावो गुरु गुण माल सखियाँ० ।

सखियाँ सुन लो रे, कोंइ कल्प सूत्र अधिकार ।
सखियाँ सुन लो रे । टेर ।

...न चरित्र थरावली, कोंइ सामाचारी सार । सखियाँ० ।
...ण मनन परिग्या करो, कोंइ ये तीनों अधिकार ।सखि०१।
...आदि जिन वीर के कोंइ शासनवित अणगार । सखि०।
...चेलक आदि वर्डे, कोंइ दश कल्पी आचार । सखियाँ०२।
...जुजड वक्रजडागयी, कोंइ पण्डित भाव विवाध । सखि० ।
...म चरम अरु मध्यजिन, काइ साधुभेद अविरोध ।सखि०३।
...किक लोकान्तर सभी काइ पर्व शिरोमणि जान । स० ।
...शण ससार में, कोंइ उसमें पुण्य विधान । सखियाँ० ४ ।
...तिक्रमण सबत्सरी, कोंइ लोच अट्टम तप धार । सखि० ।
...न वदन अरु खामणा, कोंइ साधु शुद्धाचार । सखि० ५ ।

द्रव्य भाव पूजा करे , कोंइ खमें खमाव आप । सखियाँ०
ज्ञान-सघ भक्ति करें , कोंइ श्रावक छोडें पाप । सखि०६ ।
'नाग केतु' दृष्टाँत से, कोंइ अठ्ठम तप अविकार । सखियाँ
परमेष्ठि ध्यानें सही कोंइ जिन जीवनी विस्तार । सखि ०७
पच्छानु पूरवो सुनो, कोंइ वीर चरित्त विस्तार । सखियाँ०
मोटे सत्तावीस भव, कोंइ चउगति विविध प्रकार । सखियाँ०
प्राणत नामक स्वर्ग में, कोंइ पुष्पोत्तर सुविमान । सखियाँ०
वहाँसे सुरभव भोग तज, कोंइ च्यवते पुण्य निधान । स० ९
पूरव भव में गोत्रमद, कोंइ कूराकर्मोदय पाय । सखिया०
देवानंदा ब्राह्मणी, कोंइ कूख बसे सब आय । सखि० १
चौद सुपन कल्याण मय कोंइ लखती है वह ताम । सखि
हरि कविन्द्र करते तभी, कोंइ सविनय भाव प्रणाम । सखि०



श्री कल्पसूत्र द्वितीय व्याख्यान गहूलो । ५

तर्ज पणिहारी

अवधि ज्ञानविशेष से माराबाहालाजी
च्यवन कल्याणक जान वाहालाजी
सौधर्माधिपति स्तवे मारा वाहालाजी
नमो नमो भगवान वाहालाजी । १ ।

धर्म आदि कर हे प्रभो ? मारावाहाला जी
अन्तिम तीरथ नाथ वाहालाजी ।
वन्दन करता हू यहाँ मारा वाहालाजी
मोहे करो सनाथ वाहालाजी । २ ।
भाव सहित कर वंदना मारा वाहालाजी
सोचे हृदय मझार वाहालाजी ।
नीच कुल नावें सही मारा वाहालाजी
अरिहादिक अवतार वाहालाजी । ३ ।
काल अनंते होव हैं मारा वाहालाजी
अचरिज विविध प्रकार वाहालाजी ।
कर्मोदय से वीर लें मारा वाहालाजी
नीच कुल अवतार वाहालाजी । ४ ।
ऐसे दश अचरिज हुए मारावाहालाजी
इस अवसर्पिणी मान वाहालाजी ।
सूत्रकार फरमा रहे मारा वाहालाजी
देखो चतुर सुजान वाहालाजी । ५ ।
नीच कुल की काय से माराबाहालाजी
पर जनमें ना कोय वाहालाजी ।
ताते परिवर्तन कर्म मारा वाहालाजी
सङ्कुचित यह होय वाहालाजी । ६ ।

हरिणगमेषी देव का मारा वाहालाजी
इन्द्र करे आदेश वाहालाजी।
देवा नँदा गर्भ का मारा वाहालाजी
त्रिशला कूख प्रवेश वाहालाजी ॥ ७ ॥
गर्भ परिवर्त्तन कर मारा वाहालाजी,
हरिणगमेषी देव वाहालाजी।
श्री त्रिशला शिवकर लखे मारा वाहाला जी,
चौदह सुपन सदैव वाहाला जी ॥ ८ ॥
राव देवा नन्दा लखे मारा वाहाला जी,
पूरव कर्म प्रभाव वाहाला जी।
हरणी हैं मम स्वप्न को मारा वाहाला जी,
त्रिशला सहज सभाव वाहाला जी ॥ ९ ॥
गर्भहरण कल्याणके मारा वाहाला जी,
यह दूना व्याख्यान वाहाला जी।
हरि कवीन्द्र सुनकर भवी मारा वाहाला जी,
पावी पद कल्यान वाहाला जी ॥ १० ॥



ो कल्प सूत्र तृतीय व्याख्यान गहूली । ५५ ।

तर्ज-मोना स्या के मागते सैंया ग्र लत बाज।० ।

ुख शय्या सोती हुई सती त्रिशला माता ।
निव वर चौदह स्वप्न का, पाव सुख साता ॥ सुख० १ ॥

ाग कर हसी चाल से, पियु पास पधारीं ।
सविनय सुपनों की कथा, कहती नित्नारी ॥ जग० २ ॥

ाजा सिद्धारथ कहें सुनो मान पियारी ।
मगल-शिव कल्याणमय, सुपने हैं भारी ॥ राजा० ३ ॥

गाग पुत्र सुराज्य सुख, शुभ लाभ मिलेगा ।
म कुल कमल भी आजसे, बस खूब खिलेगा ॥भोग० ४॥

लक्षण व्यजन गुण भरा, सुकुमाल शरीरा ।
ुत्र रत्न होगा सही, जग में बड़ वीरा ॥ लक्षण० ५ ॥

ाल भाव को छोड़ते, चक्री बह होगा ।
ाँ देवी ! ई सुनो, शुभ स्वप्नसुयोगा ॥ बाल० ६ ॥

ुन त्रिशला हर्षित हुई, मृदु वचन उचारा ।
र्य समर्थ कहा प्रभो ! पियु प्राण आधारा ॥ सुन० ७ ॥

ुन्दर मन्दिर में वसे, धर्म ध्यान सुलीना ।
त्र से गर्भ प्रभा कर, सती धर्म प्रवीणा ॥ सुन्दर० ८

श्री हरिपूज्य हुई तदा, त्रिशला जगमाता ।
दिव्य कवीन्द्र कहें सदा, जय जय जिन माता ॥श्रीहरि० ९

श्री कल्पसूत्र चतुर्थ व्याख्यान गहूली । ५

(जन्म समय गीत)

तर्ज—म्हारा भू के बोल० ।

श्री सिद्धारथ नृप आदेशे, सुपन शास्तरी आवे रे ।
जय विजयादिक सूचक शब्दें, खूब बधावें रे ॥
कि मगल गावो रे ॥ टेर ।

स्वप्न फलों को पूछे राजा, पडित भाव बतावें रे ।
पुत्र चक्री तीर्थ कर होगा, पुण्य मनावें रे ॥
कि मगल गावो रे ॥ १ ॥

सुन कर हर्षित राजा देवें, दान अनेक प्रकारे रे ।
पटराणी को पुन सुना कर, दु ख विसारें रे ॥
कि मगल गावो रे ॥ २ ॥

इन्द्रादेशी तिर्यक् जृ भक, धन कचन वर्षावें रे ।
गर्भ प्रभावे सिद्धारथ नृप, राज्य ऋद्धि बढ़ जावें रे ॥
कि मगल गावो रे ॥ ३ ॥

वर्द्धमान भावों को लख कर, राजा राणी भावें रे।
पुत्र हुए से 'वर्द्धमान' शुभ नाम धरावें रे॥
कि मगल गावो रे॥ ४॥

मातृभक्ति अरु अनुकम्पावश, गर्भ रहे प्रभु शोचें।
'गर्भ व्यथा का रोकू' यों निज अग सकोचें रे॥
कि मगल गावो रे॥ ५॥

निश्चल गर्भ रहे तब माता, मोह वशा हो रोवे रे।
हरा मरा या गला गर्भ मम चलन जरा ना होवे रे॥
कि मगल गावो रे॥ ६॥

यों माता के भाव जान कर वहाँ अभिग्रह धारें रे।
'मात पिता के जीते ना लू दीक्षा' अग सवारें रे॥
कि मगल गावो रे॥ ७॥

होवें जो जो दिव्य दोहले राजा वो वो पूरे रे।
करें गर्भ रक्षा सुख पूर्वक पाप को चूरे रे॥
कि मगल गावो रे॥ ८॥

साढा सात दिवस नौ महिन यों पूर जब होवें रे।
ऊचे स्थानक बैठे ग्रह शुभ—दृष्टि से जोवें रे
कि मगल गावो रे

तैम सुगा नगे दिन उगत फल्गुनी नक्षत्रे रे ।
हरि स्वामी जिन जन्म लहै, सुर पाँच रूप धरे रे ॥
रि मगल गावा रे ॥ १८ ॥

श्री महावीर जिन भुगला गीत । १७ ।

तर्ज—शाम त्याग दूसरा अपरिन मन जाय ।

(राग रेखा)

झूलत झूलत वीर झूलन त्रिशला माता गावे ।
त्रिशला माता गाय धार, झूलण झुलावें ॥ टेर ॥
नन्द तेरे सूर कोटि, चंद दूर भागें ।
दरस फरस करण तरस, नयन दौ न लागे । झूलत० १ ।
अड़ा-पड़ग रमण हमग स्वप्न तू मनावे ।
पर मेरे लाल ! नहीं, पास गिर सुहावे । झूलत० २ ।
कनक घड़ित रतन जड़ित विविध रंग भावे ।
लाल ! झूला देख अगम, मान भी सुनावे । झूलत० ३ ।
हीर चीर झूलण, सुदोरी पे साजावे ।
रमक झमक रमक झमक, घूघरा नचावे । झूलत० ४ ।
लाल ! तेरा अग रंग, साप का बुझावे ।

चग गग नीर, शीतलाई को हटावे । हुलरे० ५ ।
तू निज जन्म से पवित्र कूख मम बनावे ।
चंद्र राज राज आज, मेरे पास आवे । हुलरे० ६ ।
ऋषि कुमार कथित सार, वचन याद आवे ।
नाथ नाथ अपने साथ, तू मुझे पुजावे । हुलरे० ७ ।
समस्त वस्तु राज्य रत्न गर्भ में बढावे ।
वर्द्धमान गुणनिधान नाम तेरो ठावें । हुलरे० ८ ।
नंद ! नंदी वर्धन को अधू तुझे रमावें ।
देवर देवर कर पुकार वारी वारी जावें हुलरे० ९ ।
चेटक भूप बन्धु मेरे रूप सब लखावें ।
गोद हाथ स्कंध पे उठाय मोद पावें । हुलरे० १० ।
सुमणि रत्न रचित दिव्य खिलौने वसावे ।
निकट दूर करत विविध भांति से हँसावे । हुलरे० ११ ।
पोथि हाथ धार लाल ! पठन काज जावें ।
बाल ख्याल करत बाल साथ तू सिखावे । हुलरे० १२ ।
वर कला विलास विशद वास के भमावे ।
ज्ञान वान तू महान वय युवान पावे । हुलरे० १३ ।
अनन्य रूप राज कन्य का विवाह दावे ।
सधर नार मधुर कंठ धवल गीत गावें । हुलरे० १४ ।

उन्नीससो सत्यासी माह चतुरदशी भावे ।
हरि कवीन्द्र वृन्द वोर 'जयपुरे' सुध्यावे । हुलरे० १५ ।

श्री कल्प सूत्र पचम व्याख्यान गहूंली । ५८

तर्ज– तीरथ नी आशातना नवि करिये, हारे नवि करिये० ।

तीन ज्ञान से उपने जिन चन्दा
हाँ रे भवि कमल विकाश दिणदा ।
हाँरे व दत तोड़ें भवफन्दा,
हाँरे प्रकटे अनहद सुख कदा ।
हाँरे आनन्द अपार
तीन ज्ञान से उपने जिन चन्दा । टेर ।

छप्पन दिग कुमरी मिली वहाँ आवे,
हाँ रे जिन जिनमाता नवरावे ।
हाँरे सब सूति कर्म रचावे,
हाँरे करे नाटक सार । तीन० १ ।
सुरपति सुर गिरि पे प्रभु ले जावे,
हाँरे लघु शङ्का मन में लावे ।

हाँरे वीर मेरु शिखर कम्पावें,
हाँरे देवें शँका टार । तीन० २ ।
सिद्धारथ राजा करे सुख कारा,
हाँरे जिन जन्मोत्सव निर्धारा ।
हाँरे ज्ञाति गोत्री जिमा के उचारा,
हाँरे वर्धमान कुमार । तीन० ३ ।
शक्ति प्रशंसे वीर की हरि भारी,
हाँरे आवे देव परीक्षाकारी।
हाँरे बहुरूप धरे भयकारी,
हाँरे लहें जिन जयकार । तीन० ४ ।
मोह वशे माँ बाप भी ले जावें,
हाँरे पढ़नें को उत्सव भावे ।
हाँरे हरि ब्राह्मण रूप ले आवे,
हाँरे पूछे प्रश्न विचार । तीन० ५ ।
भेद सभी सब ही खुल जावे,
हाँरे यौवन वय सुन्दर पावें ।
हाँरे नृप पुत्री यशोदा ब्यावे,
हाँरे जल कमल प्रकार । तीन० ६ ।
मात पिता स्वर्गे सुख पावें,
हाँरे निज पूर्ण अभिग्रह भावें ।

हाँरे भाई आज्ञा से ठहराव,
हाँरे शुभ दीक्षा विचार । तीन० ७
साधु सम प्रभु जी रहे समारें,
हाँरे सम्वत्सर दान प्रचारें ।
हाँरे तब दीक्षा हेतु उचारें
हाँरे लोकान्तिकाचार । तीन० ८ ।
नन्दी वर्द्धन इन्द्र ये सहचारी,
हाँरे करे दीक्षोत्सव बहु भारी ।
हाँरे कहे जग जन जय जयकारी
हाँरे होवें वीर अणगार । तीन० ९ ।
मन पर्यंय वर ज्ञान भी तब भासे,
हाँरे सही मन वस्तु प्रकाशे ।
हाँरे नित दिव्य कवीन्द्र विलासे
हाँरे छठ तप को धार । तीन० १० ।





श्री कल्पसूत्र पचम व्याख्यान गहूलो । ५९

तर्ज-भविका श्री जिन बिम्ब जुहारो।

भविका वीर चरित चित लावो, आतम शक्ति जगावो।
रे भविका वीर चरित चित लावो । टेर।
सविनय इन्द्र प्रभु को भाषे, बार बरष तक स्वामी।
उपद्रव होंग बहुतेरे, सेवा करू सिर नामी । रे भवि० १
भाषें वीर हुआ नहीं होगा, अरिहंत पर शक्ति से।
केवल ज्ञान उपाव पावें, आतम गुण व्यक्ति से । रे भवि०२
अस्थि ग्रामे शूल पाणि यक्ष करे उपद्रव भारी।
परम शान्त दशा लखी प्रभु की, सब भक्ति विस्तारी ।रेभवि० ३
मासाधिक सवत्सर तक प्रभु, देवदुष्य पटधारी।
बाद अवस्त्र सुशोभन काया, सहें उपद्रव भारी । रे भवि० ४
कनक खल वनमें चण्ड कौशिक, सर्प महा भयकारी।
बुज्झ २ कहकर प्रतिबोधे, जाउ जिन बलिहारी। रे भवि० ५
गोशालक कुशिष्य प्रभावे, दुःख सहें अविकारी।
सगम सुर करे घोर उपद्रव, जिन निश्चल चित्त धारी । रे भवि०६
अभिग्रह अति दुष्कर धारी, स्वामी भाव सनूरे।
उड़द बाकुला बेंदीवेशे, चदनबाला पूरे । रे भवि० ७
कानों में काँसी के खीले गोपालकने डाले।

हुई कायिक पीड़ा प्रभु को, खरक वैद्य निकाले। रे भवि० ८
अन्य भी कष्ट पूतनादि उपद्रव, बारह वर्ष विचालें।
सम भावे सहकर सब स्वामी, कर्म सघनवनबालें। रे भवि०
लोका लोक प्रकाशक केवल, ज्ञान महोदय पावें।
सुरपति रजत कनक मणिरतने, समवसरण विरचावें। रे भवि० १
गौतम आदिक ग्यारह पंडित, शंकित अरु अभिमानी।
शंका मान हटाकर थापें, गणधर पद गुणज्ञानी। रे भवि० १
संघ चतुर्विध थापें स्वामी, सुर नर पूजित पाया।
बहत्तर वरष स्वआयुष भोगी, पावा पुरजिन रायारे। रे भवि० १
सोले पहर उपदेश सुनाकर, अन्त शैलेशी ठावें।
भवधारी चउकर्म हटाकर, एक समय शिव जावें। रे भवि० १
काती अमावस स्वाति कल्याणक, वीर विभु निर्वान।
वीतरागता भावे पावें, गौतम केवल ज्ञान। रे भवि० १४
वीर प्रभु आदर्श चरित को निज आदर्श बनावें।
हरि कवीन्द्र सुकीर्तित होकर, परम महोदय पावें। रे भवि० १



श्री कल्पसूत्र छठ्ठा व्याख्यान गहूंली। ६०

तर्ज—क्या कहूं कथन मैं मेरा नाथ।

जिन जीवन सुखकार रे सखिया जिन जीवन सुखकार।
निज जीवन हितकार रे सखियाँ जिन जीवन सुखकार। टेर।

[ज]न्म-जनम दीक्षा तथा रे, केवल वर निर्वाण ।
[च]ित्रा विशाखा में हुए रे, पारस जिन कल्याण । रे सखि० १।
[उ]पद्रव द्वेषी कमठकारे, दूर किया अभिमान
[क्ष]मा सहित आतम शक्तिसे नमो नमो भगवान ।रे सखि०२।
[ज]लते अहि को दिया रे, परम मन्त्र नवकार ।
पाया नागेन्द्र सुखदपद, जय जिन जगदाधार । रे सखि० ३।
[श्र]ादानी पास जिनेश्वर, सरस चरित्र चित धार ।
[स]ुख सुनकर भविजन भावे पावो भवजल पार । रे सखि०४।
। मन का तज राग जिन्होंने, वीतरागता धारी ।
[न]ीश्वर परमेश्वर वन्दों, कामविजयी जयकारी । रे सखि०५।
[क]ा प्रबल बलदर्प जिन्होंने, कीना चकनाचूर ।
[र]त्नाकर आदर्श अनुपम, ब्रह्मचर्य का नूर । रे सखि० ६।
[स]ुरक्षा हित निज सारथि को, जिनवर दें आदेश ।
[क]रुणा कामलता भी जिनकी, है आदर्श विशेष । रे सखि०७।
[र]ाजीमती सच्ची सती रे शीलवती गुणधाम ।
नेमि को राह पे लाई, मारा काल प्रणाम । रे सखि० ८।
[च]रस नेमीश्वर की ऐसी, पावन अरु परसिद्ध ।
रे कवीन्द्र जीवन कथारे, अभ्यासे सुख सिद्ध । रे सखि० ९।



श्री कल्पसूत्र सप्तम व्याख्यान गहूली । ६१

तर्ज—केशरिया थासू प्रीत लागी रे साचा भाव सु ।

भवि भावे सुन लो ऋषभ चरित अधिकार को ।
सुन दूर हटाओ दारुण कर्म विकार को । टर ।
'धनसारथ वाहक' भवे रे देकर घी का दान ।
समकित गुण पैदा किया रे, ऋषभदेव भगवानजी ।भवि० १।
'वज्रनाभ' चक्री भवे रे बीस स्थानक सेव ।
तीर्थ कर शुभ कर्मकारे, बाँध हुए जो देव जी । भवि० २।
'श्रीनाभिकुलगर' पियारे, मरुदवी' के नन्द ।
युगल रीति वारक हुए रे, श्रीयुगादि जिनचन्दजी ।भवि० ३।
'भरत बाहुवली' आदि थे रे, पुत्र एक सौ वीर ।
'ब्राह्मी सुन्दरी' बालिकारे, गुणसागर गम्भीरजी । भवि० ४।
पुरुषकला नारीकला रे आदिक जग व्यवहार ।
असि मसी कृषिकर्मकारे, जिनने किया प्रचारजी । भवि० ५
शुद्धाहार बिना रहें रे, दीक्षा ले अकलेश ।
अन्तराय के योग सेरे, बारह मास विशेष जी । भवि० ६ ।
निर्दूषण ईक्षुरसे रे, 'श्री श्रेयाँस' कुमार ।
नाथ करावे पारणारे, वर्ते जय जयकार जी । भवि० ७ ।
प्रथम भूप भिक्षु प्रथम रे, प्रथम केवली जान ।
तीर्थ कर सुखकर पहिलेरे, देवें शिवसुख दानजी । भवि० ८ ।

[द]श सहस्र मुनि संग में रे, अष्टापद अरिहन्त।
[ह]रि कवीन्द्र वन्दित हुए रे, अनुपम शिववधुकन्त रे। भवि० ९।

श्री कल्पसूत्र प्रथम व्याख्यान स्थविरावली गहूंली । ६७ ।

तर्ज—ल्घुता मेरे मनमाना, यह गुरुगम ज्ञान निधानी रे०।

वन्दों स्थविर जयकारी, वन्दत नित आनन्दकारी रे।
वन्दा स्थविर जयकारी। टेर।
जिन वीर पटोधर भारी, गौतम आदिक गणधारी।
दर्शन नित मंगलकारी रे, वन्दों स्थविर जयकारी। १।
सुधर्मा सन्तति आने, भारत में बहुगुण राजे।
बहु मानित भविक समाजे रे, वन्दों स्थविर जयकारी। २।
अन्तिम केवलि शिवगामी, ब्रह्मचारी जम्बू स्वामी।
प्रभवादिक बोधक नामी रे, वन्दों स्थविर जयकारी। ३।
शैयंभव प्रभु श्रुतज्ञानी, श्रीमनक पिता श्रुतदानी।
यशोभद्र शुभद्र विधानी रे, वन्दों स्थविर जयकारी। ४।
अन्तिम सब पूरवधारी, भद्रबाहु निर्युक्तिकारी।
स्थुलिभद्र मदन मदहारी रे, वन्दों स्थविर जयकारी। ५।

क्रम से विधु वज्र विराजी जिन की जग कीरति गाजी।
हुई शाखा वज्र सुगाजी रे, वन्दों स्थविर जयकारी। ६।
न्यायाम्बुधि बुद्धि सुधाकर, थी सिद्धसेन दिवाकर।
हरिभद्र प्रभु पण्डितवर रे बन्दों स्थविर जयकारी। ७।
नवअंग सुटीकाकारी गुरु अभयदेव भय हारी।
जिन वल्लभ शुद्धाचारी रे, वन्दों स्थविर जयकारी। ८।
दादा जिनदत्त प्रभावी, जिन चन्द्र महा मेधावी रे।
सुख सागर सहज सुभावी रे, वन्दों स्थविर जयकारी। ९।
भगवान परम गुरु सारे, हरि पूज्य विशद गुण धारे।
जिन कीर्ति कवीन्द्र उचारे रे, वन्दों स्थविर जयकारी। १०।

श्री कल्पसूत्र नवम व्याख्यान समाचारी गहूली। ६३।

राग—वारि प्रभु दशमा शीतल नाथ कि तुम सु प्रीतडीरे लो०।

सुनियें सामाचारी सार कि मुनि आचार कीरे लो।
है जो देशकाल अनुकूल कि भव्य विचार कीरे लो। सु०१।
जिस में उत्सर्ग रु अपवाद कि विधि विस्तार से रे लो।
भाषे जिनवर जगदाधार कि निज अधिकार से रे लो। सु०२।

हैं जह अठ्ठावीस प्रकार कि गुरू समझा रहे रे लो।
सद्गुरु लक्षण लक्षित भाव कि जो नित हैं बहें रे लो ।सु०३।
पहेले दिन पचास के वाद कि पर्यूषण कर रे लो।
वर्षाकाल अवग्रहमान कि धारें दूसरे रे ला । मु० ४ ।
सजल नदी लघन आदेश कि तृतीयप्रकार में रे ला।
इत्यादिक हैं भाव विशेष कि मुनि व्यवहार में रे लो। सु०५।
साधु धर्म विघाति कषाय कि दूर निवारते रे लो।
होवे यदि परमाद विवाद कि माफी माँगते रे ला। सु०६।
उपशम ही है सार अपार कि साधु धर्म में रे लो।
तातें उपशम रखते नित्य कि मन-वच-कर्म में रे ला।सु०७।
साधु सुख सागर भगवान कि श्रीहरि पूज्य हैं रे लो।
करते सुप्रति कीर्ति अपार कि दिव्य कवीन्द्र हैं रे लो ।सु०८।

संवत्सरी पर्व की गहूंली । ६४ ।

तर्ज—बिना प्रभु पास के देखे मेरा दिल बेकरारी है।

घड़ी धन आज की जानो, संवत्सरी पर्व पाया है।
हृदय से दूर माया है, अजब आनन्द छाया है। टेर।
जिनेश्वर देव शासन सद्-गुरु निग्रन्थ की सेवा।
सम्यक्त भाव से करते अजब आनन्द छाया है।।घड़ी०१।।

निजातम शुद्ध करने को जिनेश्वर चैत्य दर्शन में ।
विचरते दूर अरु हाते अजब आनन्द छाया है ॥घड़ी०२॥
सुरा सुर द्वीप नन्दीश्वर महोत्सव खूब रचते हैं ।
तथा भविजन यहाँ रचते अजब आनन्द छाया है ॥घड़ी०३॥
जगत के सर्व जीवों से विरोधी भाव को तज कर ।
अभय देकर अभय होते अजब आन द छाया है ॥घड़ी०४॥
कलप गुरु कल्पसूत्र श्री गुरु मुख मूल बारह सो ।
विधियुत भाव से सुनते अजब आनन्द छाया है घड़ी०५॥
तपी व्रति ब्रह्मचारी हो किये सब पाप खीन का ।
मवि क्षमणादिको करते अजब आनन्द छाया है ॥घड़ी०६॥
उदायी चण्ड प्रद्योतन मगोखे भाव को धर कर ।
खमात और खमते में अजब आनन्द छाया है ॥घड़ी०७॥
प्रकट सुख सिन्धु अरु भगवान् , पावन वीर शासन में ।
हरि पूज्य मह कृपया अजब आनन्द छाया है ॥घड़ी०८॥
सुभारत राजधानी में सवत उन्नीसा अट्यासी ।
कवीन्द्रों के अगम ऐसा अजब आनन्द छाया है ॥घड़ी ९॥



श्री नव पद गहूली । ६५ ।

तर्ज—देखण दो गणगोर, भँवर म्हाने देखण दो गणगोर० ।

सेवें श्री गुरुदेव सुभागी, सुन लो सहज सुभाव ।
ऋद्धि विधायक शिव सुख दायक, श्री सिद्धचक्र प्रभाव टेर।
दुर्लभ नर भव आरज खेतजु उत्तम कुल अवतार ।
सद्गुरु दर्शन पाये पुन्य से, धर्म करो इकतार । सुभा० १ ।
दान शीयल तप भाव भले ये धर्म के चार प्रकार ।
तामें भी शुभ भाव बिना तिनु, होवत हैं निस्सार । सुभा० २ ।
भाव की भूमि वही मन है जो चचल दुर्धर धार ।
तास्थिरता हित निर्मल निश्चल, ध्यान आलम्बन सार ।सुभा० ३।
है आलंबन भी बहुतेरा, सो भी सर्व प्रधान ।
जगगुरु जिनवर देव दिखावे, श्री नव पद का ध्यान ।सुभा० ४।
अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक, साधु हैं निष्काम ।
सम्यग दर्शन ज्ञान चरण तप, ये नवपद गुणधाम ।सुभा० ५।
नवपद से ही सिद्ध हुआ यह श्रीसिद्धचक्र सुनाम ।
गहन करम वन जारन कारन ज्योतिश्चक्र उद्दाम । सुभा० ६।
श्री सिद्ध चक्र प्रभाव से चक्कर भववन का मिट जाय ।
श्री श्रीपाल नरेसर वसे, हरि कवीन्द्र गुण गाय ।सुभा० ७।

निज नगर मे पधारे गुरु दर्शन समय की गहूली । ६६ ।

तर्ज—केशरिया थांसु प्रीत लगी रे साचा भाव सू० ।

दर्शन को चालो गुरुसा पधारे, आज शहर में । टेर ।
भक्ति सहित नित वन्दन करते, आनन्द हर्ष न मावे ।
विकट कोटि सकट कट जावे, दर्शन निर्मल भावे रे ।दर्श०१
गुरु मुख कमल निरख मन मधुकर निज दुख दूर गमावे ।
सजकर सारी मोह चपलता सहज समाधि उपावेरे ।दर्श०२
क्षम सघन बन हर्ष बढावन, गुरु, घन मेघ समाना ।
सरस वचन अमृत वर्षावें, शिव तरु सुखद निदानारे ।दर्श०
पञ्चेन्द्रिय विषय विपहारी, पच महाव्रतधारी ।
पचमगति गतिकारन वन्दों, पचम पद सुखकारी रे । दर्श०
गुरु गम विन वर वस्तु तत्व को, कोई भी नहीं पावे ।
गुरु गम दीप ज्योति पाते ही, हृदय तिमिर हठ जावेरे ।दर्श०
खरतर गणनायक गुरु सच्चे सुख सागर भगवाना ।
श्री हरिसागर पूज्य पधारे, सेवो सुगुण सुजाना रे ।दर्श०
मुनि मण्डल में सोहें गुरुवर, ज्यों तारा में चन्दा ।
पूरव पुन्य से दर्शन पाया, कीरति करे कवींदा रे । दर्श०

अपने शहर में पधारने के लिये सद्गुरु को प्रार्थना गहूली । ६७ ।

तर्ज—मेरे राम अयोध्या बुला लो मुझे० ।

गुरुराज विनन्ति स्वीकार करो ।
हम शहर को पावन आप करो ॥टेर॥
हैं अपावन आप के दर्शन विना हम तो यहाँ ।
सूर्य दर्शन के विना ही हैं कमल खिलते कहाँ ॥
हमें आप सुदर्शन दान करो ॥ गुरुराज ॥ १ ॥
हम हृदय सन्तापमय हैं बोध अमृत के विना ।
होती कहाँ क्या शांति है, शुभ मेघ वर्षा के विना ॥
हमें बोध सुधा को पिलाया करो ॥ गुरुराज ॥ २ ॥
आप तो आनद मूर्त्ति सत्य सुख के धाम हैं ।
दु खमय जीवन हमारा हो रहा बेकाम है ॥
हमें आप समान बनाया करो ॥ गुरुराज ॥ ३ ॥
कर्त्तव्य है क्या क्या न जाने हम गुरु गम के विना ।
भव दु ख कैसे दूर हो सद्ज्ञान के पाये विना ॥
हमें सही विवक बताया करो ॥ गुरुराज ॥ ४ ॥
आप विचरें दूर गुरुवर भव्य जाव सुबोधते ।
सत्य सयम शोधते, सब आस्रवों का रोधते ॥

शुभ महर नजर अब हम पे करो ॥ गुरुराज ॥५॥
आप गणनायक सुलायक दिव्य गुण है धारते ।
भवि जीव सब साता लहे जह आप पूज्य पधारते ॥
अब आप हमारे भी पाप हरो ॥ गुरुराज ॥ ६ ॥
श्रद्धेश्वर निज शिष्यगण को आप लेकर साथ में ।
हम को तिराने के लिये, बीड़ा उठा ले हाथ में ॥
तब दिव्य कवीन्द्र सुकीर्ति करो ॥ गुरुराज ॥ ७ ॥

गणनायक श्रीमान् हरिसागर सद्गुरुवर के देहली प्रवेश समय की गहूली । ६८ ।

तर्ज—केशरिया थासु प्रीत लागी रे साचा भाव सू०।

धन आज की घड़ियाँ दर्शन पाये गुरुराज के ॥ टर ॥
श्री हरिसागर गुरु गणनायक, लायक पूज्य पधारे ।
वन्दन चालो मङ्गल गा ला, प्रकटे पुण्य हमारे रे ॥
धन आज की घड़ियाँ ॥ १ ॥
ग्राम नगर पुर में विचरता, भविजन बोध करन्ता ।
पुण्य उदय देहली में दर्शन, देव गुरु जयवन्ता रे ॥
धन आज की घड़िया ॥ २ ॥

देहली सत्र सघन नदन वन, सुरतरु श्री गुरुराया।
भकगाव सताप विनाशक, निर्मल समकित छायारे ॥
धन आज की घड़ियाँ ॥ ३ ॥

सद्गुणशाली शिष्य सत्र में, शोभत है गुरुराया।
तारों में ज्यों चन्द्र मनोहर, मुख पर तेज सवाया रे ॥
धन आज की घड़ियाँ ॥ ४ ॥

कमल कु भौंरा मेघ कु मोरा, छाया पथिक सँभारे।
दिल हुलसत गुरु दर्शनहित त्यों, थी चित चाह हमारे रे ॥
धन आज की घड़ियाँ ॥ ५ ॥

आज ही आशा पुण्य प्रकाशा पूरण भई हमार।
भव भय वारण शिवसुख कारण, है गुरु पूज्य हमारे रे ॥
धन आज की घड़ियाँ ॥ ६ ॥

जिन आणा अनुरागी खरतर, स्वच्छ गच्छ में स्वामी।
श्री सुखसागर गुरु गणनायक, भूमण्डल में नामी रे ॥
धन आज की घड़ियाँ ॥ ७ ॥

उन के पट्टगगन में शोभे, सूरज से परतापी।
श्री भगवान गुरु गणनायक, कीरति त्रिभुवन व्यापी रे ॥
धन आज की घड़ियाँ ॥ ८ ॥

उन गुरुवर के पुण्य पट्ट पर सागर सम गम्भीरा।
श्री हरि सागर गुरु गणनायक, वर्तमान वडवीरा रे ॥

धन आज की घड़ियाँ ।। ९ ।

दर्शन पाया आनन्द छाया सुनें गुरुमुख वाणी ।
काल अनादि मोह जनितनिज, कुमति लगा फिरपाणी रे ।
धन आज की घड़ियाँ ।। १० ।

गुरुवाई तजि भजि गुरुपद को, निर्भय हो विचरेंगे ।
निगुरापन अपना सब खोकर, सद्गुरु शिष्य बनेंगे रे ।।
धन आज की घड़ियाँ ।। ११

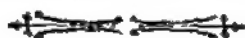
शाँति मुक्ति दाता गुरुवर से, सविनय सब हम बोलें ।
चतुर्मास की आज्ञा देवें, जय जय सब हम बोलें रे ।।
धन आज की घड़ियाँ ।। १२ ।।

सद्गुरु विहार समय की गहूली । ६९ ।

तर्ज—चतुरगी फोजा साथ रे महलार राय सेरनी सुखी पधारे आवरो रे० ।

सुन कर बात विहार की रे, आशालता मुरझाय रे ।
गुरु जी सुनो आप यहाँ पे विराजिये रे ।। टर ।।
आप बिना अज्ञानकारे, घोर अन्धेरा छाय रे । गुरु० ।
शून्य हुई सारी दिशा रे चित्त अति अकुलाय रे ।।गुरु० १।।

सनेही साजना रे, विरह सहा नहीं जाय रे । गुरु० ।
सन्ताप को मेटने रे, गुरु विन कौन सहायरे ॥ गुरु० २॥
क्या करते हुए रे, मास मीनिट सम जाय रे ।गुरु०।
जो मीनिट एक माससे रे, मोहोटी अधिक लखायरे ॥गु०३
शिक्षा हमको यहाँ रे, कौन कहे सुखदाय रे । गुरु० ।
पक सेना जिसी रे, आज दशा हो जायरे ॥ गुरु०४॥
जीव स्वरूप को रे जानें आप पसाय रे । गुरु० ।
सत्संगी आत्मा रे, समकित रंग उपाय रे ॥गुरु० ५॥
प्रमादसे जा हुआ रे, अविनय दीजो भुलायरे । गुरु०।
अकारणहित करा र, विनति सुनो चित्त लायरे ॥गु०६
सरवर सत को रे, उपकारी जग गाय रे । गुरु० ।
उपकार निमित्तसे रे, आप विराजो गुरुरायरे ॥गुरु० ७॥
नायक हरि पूज्यजी रे, विनति सुनो चितलायरे ।गुरु०।
क सविनय वीनवरे, स्वामी सीस नमाय र ॥ गुरु० ८ ॥



दीक्षा समय का गीत । ७० ।

तर्ज—कुण जाण मारा मा के मन की०।

ा का डंका बजाया, माहराज पराजय पाया रे । टे० ।
नरभव गुरु योगा, तजकर सब दुष्कर भोगा [illegible]
हा ले माउ विनाशी वर दुर्मति दूर [illegible] रे । [illegible]

सब जीव अजीव पिछानी, सुमति निज चितमें ठानी
जिनराजकी पूजा करके, निज रूप हृदयमें धरके रे ॥
चउगति चक्कर मेटनको शिवसुन्दरी से भेटनको रे
संयम सुधा लयलीना, होकर सद्गुरु आगीवारे ॥
निगुराधन दूर हटाया, गुरु चरण कमल चित लाया
षटकाय अभयपद दीना, निर्भय पद अपना कीना
षड्सूत्र अरथ दुर्गमको गुरगमसे सुन मत भ्रमको रे
अज्ञान अनादि निवारी, ज्ञानोदय रह अविकारी रे
सुख सागर शीवगामी होकर हरिपूज्य प्रधाना रे ॥
"सम्पूर्ण कवीन्द्र सुरेन्दी", गुणगावें नित्य सहेली



इति श्री खरतर गच्छ गणाधीश्वर पूज्यपाद प्रात
श्री हरिसागर सद्गुरु चरण कमल चञ्चरीक
शिष्य सन कवीन्द्र सागर विनिर्मित विविध
विधि निषेध विधायक गुरुपदश गुण-
माहात्म्य गान वर्णित कवीन्द्र केलि
गहली संग्रह प्रथमा भाग समाप्त

